पप्पू परिहार की शेर-ओ-शायरी

--- पप्पू परिहार "बुण्देलखण्डी"

पप्पू परिहार की शेर-ओ-शायरी

--- पप्पू परिहार “बुण्देलखण्डी”

पप्पू परिहार की शेर-ओ-शायरी

- पप्पू परिहार “बुण्देलखण्डी”

प्रथम संस्करण – 16 नवंबर 2011, बुधवार
द्वितीय संस्करण – 17 फरवरी 2021, बुधवार

क्यूँ याद किसी की दिलाते हो,
जिंदगी को ग़मों से रुलाते हो,
मोहब्बत हमने भी की हो,
क्यूँ रूह हमारी जलाते हो,

....

हवाएं कुछ यूँ से चल रहीं हैं,
घाटियाँ कुछ यूँ महक रहीं हैं,
चिड़ियाँ कुछ यूँ चहक रही हैं,
कामनाएं कुछ यूँ बहक रही हैं,

....

नज़रें हैं यह दिल है,
यह दिल की उल्फत है,
काबू में न रहीं किसी के,
हमारी क्या जुल्फत है,

....

ये नज़रों के तीर,
किसे नजराने में पेश कर रही हो,
हमें लगा तुम हमें,
बस हमें देख रही हो,
....

यह जुल्फें यह आँखें यह मुस्कराहट
यह खिला-खिला चेहरा,
यह नाजों नक्श जो देख ले एक बार
वह हो जाये तुम्हारा,

....

यह मासूम निगाहें,
यह कातिल अदा,
यह लहराती जुल्फें,
यह कपकपाते होंठ,

....

ये मासूमियत ये नजाकत,
ये नज़र ये इनायत,
हुश्न का जाल,
तुम्हारी मुस्कान तुम्हारी नज़र,

....

हुस्न का जलवा, तुमने बिखेरा है,
याद नहीं कहाँ, अपना बसेरा है,
अब डालें कहाँ, अपना डेरा है,
तुम्हारे दिल में अब बसेरा है,

....

ये लहराती जुल्फें,
ये खिलखिलाती हंसी,
ये मस्मस्त निगाहें,
ये अल्हड हंसी,

....

यह तन्हाईयाँ,
यह यादों में किसी की खोई हूँ,
जागी न सोई हूँ,
बस यादों में किसी की खोई हूँ,

....

उफ़ ये अदा, हो गए जिस पर फ़िदा,
न रहा गुमान, न रहा इमान,
ये जुल्फें ये नजरें ये होंठ ये अदा,
ये चेहरा या खुदा या खुदा या खुदा,

....

आरजू तो न थी कि तुम दुबारा मिल जाओगे,
जमाने भर के डर से इस तरह निकल आओगे,
अब मुझे भी तो तुम्हारा साथ देना होगा,
नहीं तो यह ज़माना मुझे बेवफा कहेगा,

....

रहबरे रक्स की नुमाइश न कर,
मोहब्बते इश्क में मिटकर,
क्यूँकर तन्हा हुई है इस तरह,
साफे फक्श में रूबरू इस तरह,

....

जन्नतें खुदा की मिलती होंगी,
किसी खुशनसीब को,
हमें तो बस यह जहान मिल जाए,
इस बदनसीब को,

....

गुल नहीं खिला तो,
कलि का क्या कसूर है,
रुत नहीं आयी तो,
मौसम का क्या कसूर है,

....

रक्खा है हुस्न ज़माने की नज़र बचाकर.
बस देख ले जरा सी नज़र उठाकर,
अंजुमन मेरा कह रहा है,
तू बस मेरा है मेरा है मेरा है,

....

रबे दिल का अरमान मैं रोक न पाया,
तुझसे प्यार किया प्यार का इज़हार रोक न पाया,
इनकार तेरा आया मैं सहन कर न पाया,
दहलीज़ पर खड़ा तेरी दुबारा इज़हार करने आया,

....

नस्तर न चला दिल पर मेरे,
रहम कर तो जरा,
दिल की रोशनाई से,
लिख रहा हूँ मुक्कदस तेरा,

....

देख रहें हैं तुमको, रूबरू होना,
अभी तुमसे बाकी है,
प्यार की आरज़ू दिल में रखते है,
अभी तुमसे कहना बाकी है,

....

नज़्म मैं क्या सुनाऊँ,
कोई नजम्दार मिलता नहीं,
बज़्म मैं क्या बजाऊँ,
कोई बज़म्दार मिलता नहीं,
....

तू है पाक साफ़,
जिन्दगी का यह अरमा लिए घूमती है,
तू है अपना हुश्न लिए,
सरे बाज़ार शरमा लिए घूमती है,

....

तेरी मासूमियत को यूँ,
नज़र न लगे किसी की,
तू गुजर जाए रस्ते से,
तेरे पर नज़र न पड़े किसी की,

....

तेरी सफ्श रौशनी में,
नहाया हुआ मंजर है यह,
आखों को सुकून दे कर,
दिल में उतर गया है यह,

....

अक्श में न देख अपने हुस्न को,
तेरे हुस्न को तेरी ही नज़र न लग जाए,
निगाहें बता रहीं रही हैं, तेरे गुरुर को,
तेरा ही गुरुर तुझे न खा जाए,

....

इश्क की इन्तहां इतनी न होती,
तो शायद हर कोई इश्क कर लेता,
इश्क का मज़मून तो पहले समझ,
तो शायद हर कोई इश्क कर लेता,

....

देख न यूँ मुस्कराकर,
जिन्दगी का फ़साना हम भूल जायेंगे,
मासूम मुस्कराहट, दिल में यूँ उतर रही है,
कि हम धड़कना भूल जायेंगे,

....

कितनी मासूम हो तुम,
यह तुम्हें पता नहीं हैं,
इन नज़रों की सफाकत का,
यह तुम्हे पता नहीं है,

....

जिनके लिए तन्हाई में,
कभी दिल मचला करता था,
सुना है वो रहनुमाई किया करते हैं,
किसी और की,

....

मुद्दत से जो न याद आये कभी,
वह क्यूँकर याद आये अभी,
मोहब्बत का फसाना,
बन गया कभी-कभी,

....

याद न दिला उसकी वो सनम,
दे गए हैं जो दिल पर जख्म,
वक्त की दहलीज पर,
खाते हैं अब यह कसम,

....

दर्द में गुजरे हुए लम्हों की बात करेंगे,
वक्त वे वक्त कुछ गुजरे
हुए वक्त की बात करेंगे,
आप आ तो जाओ

....

मातम न मना ओ प्यार मेरे,
देख अभी मैं जिन्दा हूँ,
रुखसत न हुआ अभी जनाजा मेरा,
इंतज़ार है तेरी वफ़ा का मुझे,

....

नूर बख्शा है खुदा ने तुमको,
न तुम इसका गुमान करो,
दाद हम दिया करते हैं,
कुछ हम पर भी निगाह करम करो,

……….

नुमाइश न कर हुस्न की
तुझे इश्क ने पुकारा,
हुआ तुझ पर फ़िदा मैं
ज़माने को है ये नकारा,

……….

अब समझ में आया लड़कियां क्यूँ
इस कदर पैसे की दीवानी हैं,
उनको लगता हैं की,
बिन पैसे इस दुनिया में वे अनजानी हैं,

……….

तेरे दीवानों में, एक मेरा भी नाम लिख ले,
दीवाना हूँ, दीवानगी का परवाना हूँ, चाहे तो परख ले,
कभी मुलाकात की तो, जुस्तजू पूरी होगी नहीं,
हम तो हैं बहुत दूर, और तू बहुत दूर होगी कहीं,

……….

बरबस ये हुश्न है, ये जवानी है,
तू ताकीद न कर, ये रवानी है,
फ़क्त दिल में उतरी, दीवानी है,
आ मौज कर ले, मस्तानी है,

....

न पूछ तुझे किस तरह का
बेपनाह हुश्न मिला है,
तेरी खूबसूरती को लगता,
खुदा का ही हाथ लगा है,

....

अदा ये हुश्न की, देखि जो इस तरह,
फ़िदा हो गए, हुश्न पर सब तरह,
गुमान फिर भी न रहा, अपनी औकात का,
तस्वीर देखकर ही कर ली, तसल्ली तौकात का,

....

तेरा आशिक हूँ,
तेरा दीवाना हूँ,
न समझ मुझे गैर,
तुझ पर मर मिटनेवाला हूँ,

....

कुछ तो प्यार कर,
दिल का इज़हार कर,
इंतजार में खड़े हैं,
थोडा तो इकरार कर,

....

वाह, तेरी सोखी बहुत भाति है,
वाह, तू अदाकारी क्या निभाती है,
वाह, तू हुश्न क्या बरपाती है,
वाह, तू क्या भरमाती है,

....

तेरे बेपनाह हुश्न की तारीफ़ करता हूँ,
तेरे अंदाज़े बयां की तारीफ़ करता हूँ,
तेरी सादगी की तारीफ़ करता हूँ,
तेरी अदायगी की तारीफ़ करता हूँ,

....

ग़ज़ल पेश करने का,
तेरा अन्दाज़ भा गया,
तेरी आवाज़ का,
एक-एक लफ्ज़ समां गया,

....

है प्यार तो कुछ न सोच की दुनिया क्या
कहती है,
नहीं है अगर प्यार तो सुन दुनिया क्या
कहती है,

....

हर पल इस जिन्दगी का, कट जाता है अब,
तेरी यादों के सहारे,
हर लम्हा जी लेता हूँ, वक्त गुज़र जाता है,
तेरी यादों के सहारे,

....

प्यार का इज़हार,
सरेआम न कर,
नज़र लगेगी ज़माने की,
ये काम न कर,

....

बदल जाता है रिश्ता,
कुछ पल की बातों से,
हो जाते हैं,
अपने कुछ पल की मुलाकातों से,

....

यूँ जबाँ खुलती नहीं,
हमेशा तेरे सामने,
पर आज आलम कुछ और,
तू है मेरे सामने,

....

मजार पे मेरी, फूल मोहब्बत के, चड़ा देना,
प्यार किया है मुझसे, एक बार, चली आना,
आंसू न रोना, दिल अपना न खोना,
देखकर कबर मेरी, बिलकुल न रोना,

....

खुदा हसीनों को हुश्न देता है,
तो गुरुर क्यूँ देता है,
पल में कुछ होती है,
पल में कुछ और हो जाती है,

....

वक्त ये बेजार कर दिया,
आलिमे दरकार कर दिया,
मौज़ुये मुरब्बत में,
हलिये मोहब्बत में,

....

वक्त ये फ़साना था,
हालिये जमाना था,
तुफ्र कर गया मोहब्बत की,
एक ये दीवाना था,

....

मोहब्बत तो उससे होती है,
जिससे नज़रें दो चार होती हैं,
जहन में उतर जाता है वो,
मुलाकातों की शुरुवात होती है,

....

बेरहम वक्त जुदा कर देता है,
यादों के सहारे जीना है अब,
इस जिन्दगी का मकसद,
तुझे फिर से अपनाना है तब,

....

यूँ घूर कर जो देखा तुमने,
यूँ ओंठों को चबाया तुमने,
यूँ अपने को सजाया तुमने,
यूँ दिल को हिलाया तुमने,

....

गुरुर है हुश्न का, या फिर तुफ्र है जूनून का,
कभी जिन्दगी में, मिला नहीं सुकून का,
फितरत है तेरी बदल-बदल कर आजमाने की,
अब न कर यह गलती, इसे दुबारा दोहराने की,

....

तुम्हारी नजर क़त्ल करती है,
तुम्हारी मुस्कराहट क़त्ल करती है,
तुम्हारी अदा क़त्ल करती है,
इतनी बड़ी बात पल्ले न पड़ती है,

....

जुदा तो हुआ, पर दिल से जुदा न हुआ,
तेरी धड़कन, मेरी धड़कन का अहसाश एक हुआ,
राहें बिछड़ जाती हैं, मंजिले बदल जाती हैं,
चलते हैं जब जिन्दगी में, तनहायियाँ रह जाती हैं,

....

तू न समझ के
तेरे पीछे वक्त बरबाद किया,
मैंने अपने को न सही,
तुझे तो आबाद किया,

....

नवाजिशें वक्त की

बीत जाती है,
यादें इस जहन में
रह जाती हैं,

....

तवराजू थी, तमन्ना थी,
फितरत थी,
इश्क का इस जहाँ,
तू ही एक मकाँ थी,

....

होश नहीं,
दिल्लगी कर लेता हूँ,
बुरा मान गयी,
दो घडी मिल लेता हूँ,

....

तुर्बत की जिन्दगी है,
मोहब्बत का मकाँ है,
प्यार बस इस जहाँ में,
तेरे सिवाय कहाँ है,

....

आखें मेरी, तेरा आईना है, देख अपनी
तस्वीर इसमें,
पल-पल पलकें भी न झपकेंगी, समाँ
जायेगी इसमें,

....

न समझ की नागवार गुजरी जिन्दगी,
न कुछ मिला है,
वक्त पर मिल जाता है मकाँ,
बस बात इंतज़ार की है,

....

न नाज़ उठा,
न नखरे दिखा,
बस पर्दा उठा,
तेरा हुश्न दिखा,

....
तेरे यूँ देखने से,
तुझपर फ़िदा हो गया,
तेरे बिना रहा नहीं जाता,
ये क्या हो गया,

....

आय हाय,
इस तरह से अगर तू हंस देगी,
खुदा कसम,
अपनी तो किस्मत ही खोल देगी,

....

ये शोखियाँ, ये अदाएं,
ये मुरब्बत, ये सौदाएं,
मगरिब कि जानिब तो जाएं,
तु बता जिन्दगी कहाँ जाएं,

....

न शक है,
न शुब्ह है,
हमें पता है की,
ये तू ही है,

....

कुछ सुनने, कुछ गुनगुनाने आये हैं,
जिन्दगी में गम बहुत हैं,
गम भुलाने आये हैं,
कुछ सुनने, कुछ गुनगुनाने आये हैं,

....

तेरी मौशिकी में, तेरी बज़्म में,
कुछ नज्म, कुछ ग़ज़ल, पेश करता हूँ,
इस बहाने से, तुझे मोहब्बत का,
पैगाम पेश करता हूँ,

....

ग़ुरबत में तेरी मोहब्बत का,
क्या फ़साना सुनाया,
ओ हसीना तुझे तो आना था,
पर तू न आया,

....

हाल दिल का सुनाया,
तो रो पड़े,
आंसू भी न निकले,
और निकल पड़े दिल से,

....

तू तो बहुत निखर गयी है,
वक्त के साथ-साथ
या खुदा
कितनी सुन्दर हो गयी है,

....

नागवार गुजरी जिन्दगी,
तेरा दीदार न कर पाया,
तुझे तस्वीरों में तो देखा है,
पर अभी सामने न देख पाया,

....

खोयी हो ख्यालों में
तुम हमारे शायद,
अंजुमन तो यही है
तुम्हारे चेहरे का शायद,

....

बजिबे खातून, तुझे ख़त लिखता रहा,
जवाब न तेरा आया, पर मैं लिखता रहा,
स्याह हो गयी जिन्दगी, स्याही से,
तू एक जवाब दे दे, रोशनाई से,

....

आवाज़ की खनक भी पायी है,
बेपनाह हुश्न भी पाया है,
शोखी और अदा भी पायी है,
तुम्हें तो खुदा ने बड़े नाज़ों से बनाया है,

....

शदाकत तेरे हुश्न की,
परवान जबसे चड़ी है,
भूल गया मैं सब कुछ,
तू जबसे सामने खड़ी है,

....

नसाफत की जिन्दगी से मुरब्बत की बात
नहीं होती,
दीदार तो हो जाता है पर तुझसे मुलाकात
नहीं होती,

....

इस लिबास में
तुम खूब फब रही हो,
लगता है
जैसे हमें निहार रही हो,

....

रफत इश्क जब दिल में खिल जाता है,
खुशबू अपने आप सब तरफ फ़ैल जाती है,
लोगों को बताना नहीं पड़ता है,
बात अपने आप पता चल जाती है,

....

सतयुग में विश्वामित्र कि
तपस्या मेनका ने भंग कि,
कलियुग में तपस्या ने
मेरी तपस्या भंग की,

....

नज़रें यूँ मिला कर
झुका लेती हो तुम,
क्यूँ देखकर मुझे
शरमा जाती हो तुम,

....

आवाज़ सुनी है तेरी, जबसे,
भूल गया आलम को, तबसे,
जहाँ में कहूं मैं ये, किससे,
तभी तो कह रहा हूँ, तुझसे,

....

तेरी अदा का तेरी अदाकारी का दीवाना हूँ,
तेरे नाज़ का तेरी नजाकत का दीवाना हूँ,
तेरे हुश्न का तेरी खूबसूरती का दीवाना हूँ,
तेरे शफा का तेरी शराफत का दीवाना हूँ,

....

बदस्तूर तेरा यह जुल्म,
हम सह न सके,
अब तो दीदार करा दे,
तेरे बिना हम रह न सके,

....

हंसी ठिठोली, यह चुलबुलाहट,
देती है, तेरे आने कि आहट,
आस लगा कर बैठें हैं तेरी चौखट,
थाम रहे हैं, अपने दिल कि बौखलाहट,

....

सरे बाज़ार यूँ न चल बे परदा कर
अपने हुश्न को,
देखने वाले बहुत,
और लूटने वाले भी हैं तेरे हुश्न को,

....

अगर वक्त है, तफसील से अपनी कहाँ
सुनाता हूँ,
सुनती जा, तुझे अपनी वफाओं कि बेवफाई
सुनाता हूँ,

....

खुश है जमाना तेरे दीदार से,
क्यूँ तू छिपा रही है अपने हुश्न को,
दुआयें देंगे तुझको, नज़रों से गुज़र जाने दे
ज़माने कि अपने हुश्न को,

....

मुर्बते हुश्न कि
तेरे दायरे से न निकल पायेंगे,
मर जायेंगे, मिट जायेंगे,
तुझे खुश कर जायेंगे,

....

ए हुश्न तुझे किस पर नाज़ है,
तेरी आवाज़ भी लाज़वाब है,
बस प्यार की एक नज़र की दरकार है,
तुझे देखने का अरमा बेक़रार है,

....

तेरी शोखियाँ, ये तेरी नज़रें,
हसिनायों को भी जला देती हैं,
तेरी लटें, ये तेरी हंसी, मु
झको तो एक सुकून दे जाती है,

....

आईना देखा सुबह,
तेरी याद में रात भर सो न सका,
तू दिखी सुबह,
तेरी हालत को बयां न कर सका,

....

बहुत वक्त बीत गया,
तेरा दीदार अभी तक न हुआ,
तू कुछ तो इस तरह से कर,
की मेरी आखों को भी सुकून मिले,

....

अंजुमन में तेरे,
गुल तो बहुत खिले होंगे,
प्यार तू हमसे कर ले,
गुल हम भी खिला सकते हैं,

....

बेपनाह मोहब्बत थी,
बेसुमार प्यार था,
हुआ कुछ इस तरह की,
दिल मिलने को बेक़रार था,

....

चमन में तेरे फूल खिले,
महक मेरे घर तक आयी,
दिल ने तेरे याद किया,
धडकन मेरे दिल तक आयी,

....

हाय यह तेरा नाज़ुक बदन,
आखों की सोखियों का चमन,
लहराती जुल्फों का दामन,
मदमस्त जावानी की उफन,

....

रब यह कैसी नजाकत है,
रब यह कैसी हुश्न परि है,
रब यह कैसी तुफ्लिश है,
रब यह कैसी मोहब्बत है,

....

सौफदाई तेरी आखों की
गुज़र गयी दिल के आर-पार,
बेपनाह हुश्न की मलिका
आवाज़ तो सुना दे एक बार,

....

मंज़र-ए-हुश्न का तू दरिया है,
डूब भी जाऊं तो मेरा फायदा है,
इश्क का भूत चढ़ गया है,
अब तेरे बिना रहा न गया है,

....

तसबुर तेरे हुस्न का माजी समझ न पाया,
क़िबला तेरे आशिक को ये माजरा न आया,
फनास्तुस की जिन्दगी का राज़ कुछ न पाया,
महबूबे हरम में आज में घुस न पाया,

....

आपकी आवाज़ को सुनकर अपने कानो
को सुकून देता हूँ,
आपकी अदावत को देखकर अपने आखों
को सुकून देता हूँ,

....

ये हुश्न, ये नजाकत,
ये मस्ती का समां,
ये दिल, ये अदावत,
ये दिल का मकां,

....

वो दौर गुज़र गया,

वो वक्त गुज़र गया,
तेरे दीदार-ए-आलम का
लम्हा ठहर गया,

....

तारुफ़ हुआ तेरा खुदा से,
यह जानकार दिल को सुकून मिला,
हमको न सही,
किसी और को तो खुदा का नूर मिला,

....

तुझे हुश्न बक्शा खुदा ने
और नजाकत भी दी है,
तेरी आवाज़ भी खुदा ने
तुझे एक तोहफे में दी है,

....

मंज़र-ए-हुश्न का तू दरिया है,
डूब भी जाऊं तो मेरा फायदा है,
इश्क का भूत चढ़ गया है,
अब तेरे बिना रहा न गया है,

....

तुफ्लिसे वक्त की अंजुमन में

न हम इस तरह रुक सके,
फैजाई हो गया मंज़र मक्बूले हुश्न का
इन्तखाब न कर सके,

....

नस्तर उतार दिया दिल में
उसने इस तरह जालिम बनकर,
ख्याल भी न रखा की जिन्दगी का कुछ
सफ़र अभी खड़ा है तनकर,

....

तसबुर तेरे हुस्न का माजी समझ न पाया,
तेरे आशिक को ये माजरा न आया,
जिन्दगी का राज़ कुछ न पाया,
महबूबे हरम में आज में घुस न पाया,

....

किसने कहा,
यूँ हुश्न को बेपरदा कर दो,
रहने दो परदा,
दीवानों को विदा कर दो,

....
रफ्तगुल हुश्न यूँ

बेपर्दा नहीं होता,
गर तू आखों से
पहचानता होता,

....

अब दर्द ही सही,
कुछ तो मिला,
खाली न रहे,
निकाला तो सिला,

....

आफ़ताब हुश्न का
टपकने लगा है,
दरिया अब नूर का
बहने लगा है,

....

शहादत में हुश्न की
बड़े-बड़ों को पाया है,
बगावत में हुश्न की
बड़े-बड़ों को पाया है,

....

सरे बाज़ार हुश्न को

बेपर्दा कर चलोगी,
मजमा लग जाएगा,
महफ़िल सजेगी,

....

ऐसे न दिखाओ हुश्न
यूँ बरबाद ये जहाँ होता है,
तेरे चाहने वालों का
आखिरी हस्र यहाँ होगा है,

....

हुश्न की जुल्फों में
कोई ऐसा न हो जो उलझा न हो,
प्यार के पलों में
कोई ऐसा न हो जो खोया न हो,

....

देखा हुश्न तो, हमको भी सुरूर आ गया,
बीते हुए वक्त का, नगमा याद आ गया,
वक्त पर हम भी फिर, उसी को गा दिए,
उसको सुनकर, वो हमारे संग चल दिए,

....
बस अब बेबसी थी,

उसके दिल में न हंसी थी,
रो वो न सकी थी,
उसकी आखों में नमीं थी,

....

जो वक्त गुज़रा,
बेहद रंगीन गुज़रा,
उसका मुखड़ा,
बेहद हसीन निखरा,

....

जिन्दगी कट रही थी,
किसी तरह,
अब वह न मिल रही थी,
उसी तरह,

....

हम तो हुश्न के,
तेरी अदा के भी कायल हैं,
तू न देखे,
तेरी इस अदा से भी घायल हैं,

....
हुश्न जब सोया होता है,

कितना हसीन लगता है,
उसे बस एक टक निहारते रहने का
जी करता है,

....

इतनी बेदर्दी से,
दिल मेरा तोडा,
अवाक रह गया,
तुने जो छोड़ा,

....

हुश्न न गरीब था,
आशिक न अमीर था,
दुनिया का यह शगल पुराना था,
हर प्यार करने वाले को बताना था,

....

न दीदार कर, न इंतज़ार कर,
अब तो हम चले,
न तुम अब आओ,
हम तो किसी और के हो चले,

....

हुश्न को यूँ छुपाया नहीं जाता,
रूह को यूँ जलाया नहीं जाता,
दिल को यूँ रुलाया नहीं जाता,
किसी को यूँ सताया नहीं जाता,

....

चन्द रोज़ पहले की तो बात है,
हुई उनसे यूँ मुलाकात है,
आज वो फिर मिल गयीं,
चलते-चलते मेरी बन गयीं,

....

मक़सूद हुश्न था,
मक़सूद जवानी थी,
छाई रवानी थी,
एक कहानी थी,

....

बहुत हुश्न को संभाला था, उसमें दिल कितना डाला था,
न मिला चाहने वाला था, सबके दिल पर लगा ताला था,

....

मेरे मयखाने में आकर,
इतनी न पिया करो,
ये जुल्म अब बंद करो,
अब रहम किया करो,

....

यादों के उसके सहारे,
बिना किसी को पुकारे,
बीत गयी जिन्दगी यूँ कर गयी,
अब तक याद न उसकी गयी,

....

फ़ना हुस्न को,
इश्क पर होना पड़ा,
जब पाला,
दीवाने आशिक से पड़ा,

....

तस्सवुर तेरे चेहरे का,
रोज़-रोज़ पीता हूँ,
आज न आ सका,
तस्वीर को देख लेता हूँ,

....

अभी उसने देखा,
चुहुक-सी गयी,
किया उसने अनदेखा,
चमक-सी गयी,

....

बहुत देर से उसकी आस में बैठा था,
अपना चेहरा लिए उदास बैठा था,
उसका गली में आना न हो रहा था,
यूँ तो उसकी गली के पास बैठा था,

....

जहां में रहकर, जिन्दगी को झुककर,
जिसने सलाम किया,
बा खुदा उसने जिन्दगी भर
आराम किया,

....

आने दो, खाने दो,
सोने दो, जाने दो,
न रुको, न रोको,
न झुको, न झोको,

....

न हुश्न को पता था,
इश्क किसे कहते हैं,
न इश्क को पता था,
हुश्न किसे कहते हैं,

....

मुस्कान तो बिखेर दी,
अब जान भी बिखेर दो,
देर इतनी क्यूँ हो रही,
अब कुछ तो बिखेर दो,

....

दरबार सज गया हुश्न का,
मल्लिका को आने दो,
बैठे रहने दो दीवानों को,
मजनुओं को न जाने दो,

....

उसके महक से जिन्दगी महक जाती है,
उसके चहक से जिन्दगी चहक जाती है,
उसके बहक से जिन्दगी बहक जाती है,
उसके लचक से जिन्दगी लचक जाती है,

....

काश वो पल न आता,
जब मैं उससे बिछड़ा था,
काश वक्त फिर जाता,
जब मैं उससे बिछड़ा था,

....

न भूल सका उसको,
जिससे कभी मोहब्बत की,
आखों के सामने रहती,
आज भी तस्वीर उसकी,

....

पागल न समझ,
दीवाना कह दे,
किसी का समझ,
अपना कह दे,

....

बाहर से खुशबुओं का
अहसास था,
भीतर से जिन्दगी का
अहसास था,

....

किसी का प्यार,
किसी का इज़हार,
मेरा ही प्यार,
दिलरुबा का इज़हार,

....

न देखा सुबह का भूला,
न देखा शाम का भूला,
जबसे तुझको है देखा,
बस देखा अपने को भूला,

....

उतर कर हुश्न ने,
यूँ जो गरीब को देखा,
नसीब उसका खुल गया,
दरीब को देखा,

....

पागल न समझ,
दीवाना कह दे,
किसी का समझ,
अपना कह दे,

....

राह हुश्न वालों की,
यूँ आसान न समझना,
तमाम मजनुओं से,
होता इनको झगड़ना,

....

यूँ तो अब जमीं पर,
पैर पड़ते नहीं उनके,
जब उनका-उन्होंने हाथ,
जो पकड़ा ठनके,

....

शराफत अब हुश्न की,
दिखाई नहीं देती,
सरे आम गलियों में,
दिखाई तबसे देती,

....

हमसे तो उसने नफरत में,
बहुत-कुछ कह दिया,
अपने दिल का सारा मलाल,
यूँ हम पर बह दिया,

....

बेहया की जिन्दगी,
कट उसकी बेकार में,
न प्यार मिला,
न दुलार मिला, बाज़ार में,

....

अब तो हुश्न को,
पर्दा न करना था,
शर्म अब कैसी,
बेपरदा रहना था,

....

बा-खुदा सारा आलम बीत गया,
उसे मनाने में,
फिर भी न समझा जालम,
लगा उसे पटाने में,

....

हाल-बेहाल जिन्दगी,
यूँ ही नहीं कोई सँवार देता,
वफ़ा बिना,
कोई किसी को यूँ ही नहीं प्यार देता,

....

इशक न हुआ किसी से अभी,
तलाश में अभी भटकता हूँ,
शायद इसी भटकन में,
किसी के दिल से अभी लटकता हूँ,

....

खनक सुनी आवाज़ की,
दिल को छू गयी,
तेरी खनकती आवाज़,
रूह में समाँ गयी,

....

जबसे उसने अपने हुश्न को,
बेपर्दा किया है,
बाढ़ आगयी है,
दीवानों की, तडफा दिया है,

....

किनारा कर लिया,
अब मेरी मोहब्बत से,
पहले तो कहते थे,
कि न जुदा होंगे तुमसे,

....

क्यूँ इस तरह,
जिन्दगी को, रोया तुमने,
अभी तो बहुत,
बाकी है, क्या खोया तुमने,

....

बेहतर है नुमाइश तेरी,
बेहतर है तेरा यूँ कहना,
किसी की मजबूरी को,
लफ़्ज़ों में यूँ तेरा पिरोना,

....

हम तरसे थे,
मोहब्बत में तेरे लिए,
बादल जैसे बरसे थे,
जमीं के लिए,

....

चन्द लम्हों का अफसाना था,
बीत गयी रात, बताने में,
यूँ जिन्दगी कुछ कम न थी,
बीत गयी समझाने में,

....

बड़ी बेरुखी से मुंह मोड़ा,
बड़ी बेदर्दी से दिल तोडा,
टुकड़े न बीन पाए,
मुड़कर भी न देख पाए,

....

बड़ी बेवकूफ थी, तुझसे प्यार कर बैठी,
तेरी बातों में आकर, इज़हार कर बैठी,
न पता था तेरा यूँ जाने का,
मुझे छोड़कर किसी और को अपनाने का,

....

यूँ तो मजमा अब हुश्न का,
लगता सरे बाज़ार नहीं,
देखना हो हसीनाओं को तो,
आसमान की सैर सही,

....

अब पूछते हो,
कितना दुःख तुने सह लिया,
तब न प्यार का,
कुछ इस तरह सिला दिया,

....

यूँ न खोलो अंजुमन को,
बंद रहने दो इसे,
आखें अभी खुली नहीं हैं,
देख न सकेंगी इसे,

....

यूँ तो नफरत न थी,
बस प्यार था,
उसका इज़हार था,
इनकार न था,

....

कुछ तो मेरी मजार पे
फूल चढ़ा दो,
अब आये हो तो
कुछ आंसू बहा दो,

....

ऐसी बेरुखी न दिखाओ,
चेहरे से नूर टपकने दो,
क्यूँ मोहब्बत को दबा रही हो,
यूँ ही महकने दो,

....

मिला है प्यार,
यूँ मोहब्बत जता दी मैंने,
दूरियाँ मिटा दी,
फासले मिटा दिए मैंने,

....

तय शुदा जिन्दगी,
गुज़र गयी वक्त से पहले,
हर साँस यूँ निकल गयी,
हर साँस से पहले,

....

साँझ तो ढल गयी थी,
रात तो निकल गयी थी,
आये हुजुर न अब तक,
याद तो मचल गयी थी,

....

प्यार तो किया था तुने,
पर इज़हार बड़ी बेदर्दी से किया,
जज्बा था पर जोश न था,
समझा यह तूने हया से किया,

....

कुछ तो वक्त गुज़र लूं,
तेरे आहाते में,
फिर कहाँ से आऊंगा,
तेरे दरवाजे में,

....

बात बन गयी यूँ,
थोड़े से मनाने से,
रूठ गयी थी.
वो थोड़े से अन्मनाने से,

....

रोक लिया हुस्न ने,
की जाओ न अभी,
कुछ देर और बैठो,
पहलु में मेरे अभी,

....

हुश्न बेदार था,
इन्तहा हमसे प्यार था,
रूक सी गयी थी जिन्दगी,
बस उसकी हाँ का इंतज़ार था,

....

यूँ नजदीक,
तेरे हम पहुँच तो गए हैं,
दरवाज़ा खोल दे दिल का,
कब से खड़े हैं,

....

हमसे नफरत करोगे,
मोहब्बत में पछताना होगा,
प्यार के बदले प्यार जब
जताना होगा,

....

बाकायदा जिन्दगी कट गयी,
तेरी बाँहों में,
किसी की याद न आयी,
जिन्दगी की राहों में,

....

तुम नाराज़ थे,
जिन्दगी की राहों से,
क्या प्यार न जताया उसने,
आहों से,

....

हमनवा से दोस्ती,
दुश्मनी में बदल गयी,
तेरी मोहब्बत प्यार से,
बेवफाई में बदल गयी,

....

कुछ जिन्दगी को,
दूर से देखा न किसी ने,
पास आया नफरत का,
जूनून देखा न किसी ने,

....

चन्द लम्हों को,
चन्द लफ़्ज़ों में पिरो लेता हूँ,
जिन्दगी के चन्द पलों को,
सभी से कह लेता हूँ,

....

कोन वो खुशनसीब होगा,
जिसका तू हमसफ़र होगा,
जिन्दगी सँवर जायेगी उसकी,
हसीं उसका सफ़र होगा,

....

यूँ न समझ अपने हुश्न को,
जंग-पे-जंग लडवा सकता है,
निकल तो मैदान में,
दोस्त से दोस्त को मरवा सकता है,

....

शुक्रिया आपका,
मेहरबानी आपकी,
इस काबिल समझा,
कदरदानी आपकी,

....

कुछ इस तरह से,
उसकी नज़र, यूँ, गुज़र गयी,
वफ़ा थी वह,
पर न जाने क्यूँ बेवफाई कर गयी,

....

शायरों की जिन्दगी का आलम,
शेर में नज़र आता है,
समझ लेता है, हर कोई,
यूँ जिन्दगी से गुज़र जाता है,

....

ऐसा भी क्या था,
जो छिपा लिया हमसे,
भूल गए क्या,
अब अलग नहीं हैं तुमसे,

....

बस अब बहुत हुआ ये रोना-धोना,
अब चलो मेरे बिना यहाँ न रहना,
अब तो साथ रहेंगे, साथ सहेंगे,
दिन जिन्दगी के, साथ बीतेंगे,

....

कुछ तो हाल दिल का कह दो, यूँ न जाओ,
नज़रें ही मिला लो, यूँ चुराकर तो न जाओ,
पड़ लेंगे हाल पूरी रूह का, नज़रों से तेरी,
न भी मिलीं तो, धड़कन है एक तेरी-मेरी,

....

ये क्यूँ भटक रही है,
नज़र किसी पर न टिक रही है,
बेचैन क्यूँ दिख रही है,
शायद किसी को ढूँढ रही है,

....

दिल पर दरवाज़ा न रखा,
कि कोई तोड़ न दे,
दिल को खली न रखा,
कि कोई मोड़ न दे,

....

नज़र टिक गयी नज़ारे पर,
आँख लग गयी इशारे पर,
हुश्न को अब क्या करना है,
हमको ही मरना-मिटना है,

....

रहने दे बस,
सताना छोड़ दे उसको,
वो तेरी नहीं,
जताना छोड़ दे उसको,

....

दीवानेपन की हद,
बेहद होती है,
हदों के खात्मे पर,
शुरू होती है,

....

खुदा तेरा शुक्रिया,
इन हसीनाओं का दीदार करा रहा है,
एक-से-एक हुश्न के नागीनो का,
आज दीदार करा रहा है,

....

बहुतों ने प्यार किया,
बहुतों ने इज़हार किया,
हमने जो प्यार किया,
हमने जो इज़हार किया,

....

कनखियों से वो देख लेती है,
फिर मुँह उस तरफ फेर लेती है,
मची है हलचल उसके दिल में,
यूँ ही अपने को समझा लेती है,

....

भूलेगी न वो अब,
उम्र भर मुझे,
भले इज़हार करे,
प्यार का न मुझे,

....

दिल में बीज प्यार का,
अब उसके जमा दिया,
अब उसे अपने प्यार का,
अहसास करा दिया,

....

तेरे नैनों में,
तेरा दिल उभर आया है,
तू छिपा ले,
ज़माने को नज़र आया है,

....

बसते हो निगाहों में,
तुम्हे अब निस-दिन देख सकूंगी,
आ तो गए हो, तुम्हे देखने के लिए,
अब आखें न खोल सकूंगी,

....

हवाला दिया हुश्न का,
यूँ बेपर्दा होकर,
सरे बाज़ार गिर पड़ा मैं,
गश खाकर,

....

बेफिक्र यूँ जिन्दगी चल रही थी,
दुनिया से अन्जान होकर,
आपकी नज़र ने जबसे देखा,
अपनी नज़र की जान होकर,

....

यूँ न दिखाओ मंज़र,
अब जुल्म सह नहीं सकती,
पड़ा रहने दो बेखबर,
तन्हाई अब जा नहीं सकती,

....

हमसे वक्त ने कुछ यूँ कहा,
अब तो मैं बस बीत चला,
बापिस फिर न आऊंगा,
जिन्दगी फिर न बसाऊंगा,

....

मेरे तो दिल में,
अब मकाँ किसी और ने बना लिया,
तू बेवफा निकल गयी,
तेरी बेवफाई को बसा लिया,

....

यूँ जिन्दगी के हवाले से,
तुमने ये क्या कह दिया,
दिल चीर कर निकल गया,
खून भी न बहने दिया,

....

दिल के दरवाजे पर,
नाम उसका रहने दो,
काम तुम करो,
बस नाम उसका रहने दो,

....

न हुश्न को छिपा,
दीदार अब करने दे,
बेपर्दा जब हो गयी,
पर्दा अब रहने दे,

....

महफ़िलें न सुहाती हैं,
मौसिकी न भाती है,
तनहा-सी जिन्दगी है,
आग सुलग-सी जाती है,

....

तनहा-सा हो गया,
उसके जाने के बाद,
गुमसुम-सा हो गया,
उसके जाने के बाद,

....

किस्सा किसे सुनाये तेरी बेदर्दी का,
यहाँ सब बेदर्द हैं,
सबके अपने-अपने किस्से हैं,
यहाँ सब मेरे हमदर्द हैं,

....

दिल ही दिल में प्यार किया,
उसने कब इनकार किया,
बात जब इज़हार की आयी,
झट उसने इनकार किया,

....

न जताना चाहती थी,
ज़माने के सामने,
हया उसकी आ गयी थी,
उसके सामने,

....

चाहती थी मन में,
कह न सकी कभी,
किसी दुसरे के साथ,
चली गयी अभी,

....

हर नज़र का, असर था,
तेरी नज़र पर,
हया की शोखी थी,
तेरे नूर-ए-नज़र पर,

....

नज़रें यूँ घूर रही थी,
सांसें यूँ थाम रही थी,
बचकर ज़माने की नज़रों,
भाग मैं रही थी,

....

आशिकों के किस्से,
बड़े निराले होते हैं,
आशिक ही,
इसे समझने वाले होते हैं,

....

बेपर्दा, हर हुश्न हो जाए,
तो क़यामत आ जायेगी,
दीवानों की बस्ती जहाँ में,
जहाँ-तहाँ बस जायेगी,

....

चन्द पलों की तो बात है, देख लेने दो,
गुज़र जाने दो रास्तों से, दम लेने दो,
ओझल हुआ जो नज़ारा, बस लेने दो,
न भागो इस तरह, कुछ चैन लेने दो,

....

बड़ी हसरतें थीं तुझे देखने की,
पर बस अब तो जा रहा हूँ,
शायद कभी नसीब से मिल पाया,
ऐसी आस लगा रहा हूँ,

....

मुद्दतों से वक्त, यूँ बस गुजार रहा था,
किसी का इंजतार, बस कर रहा था,
आ गया अचानक, आखों के सामने,
भर लिया बाँहों में उसे, लगा समाने,

....

मरहम लगा दिया किसी के प्यार पर,
फिर न उघाड़ना सुखा हुआ जख्म,
वो मारे दर्द के मर जाएगा याद में किसी की,
दे जाएगा तुम्हे भी एक ताज़ा जख्म,

....

बस यूँ बसा लिया था,
दिल में मकाँ तेरा,
बैठकर वहीँ, लग जाता था,
दिल ये मेरा,

....

हुश्न दिया है,
तो गुरुर कर सकते हो,
दिल दिया है,
तो प्यार कर सकते हो,

....

हमसे यूँ बेगानों की तरह,
बात न करो,
हमको यूँ अनजानों की तरह,
न देखो,

....

बात जज्बातों की सुरों में पिरोना,
आवाज़ से सजाना, उसको गाना,
अंदाज़ ये तुम्हारा, दिल पे छाना,
सबको है भाता तुम्हारा यूँ गाना,

....

मुझे न पता था,
इश्क में बात, इशारों में होती है,
अब पता चला, इशारों की बोली,
इश्क में इजाद होती है,

....

ऐसी किसी राहों पर होंगी अपनी मुलाकातें,
कोई तो अपनी होगी, जो पकड़ेगी मेरी बाहें,
गुमसुम रहेंगे दोनों, बातें तब न होंगी,
रास्ते पर कदम होंगे, बाँहों में बाहें होंगी,

....

ऐसी क्या बेदर्दी थी कि,
दिल हमारा तोड़ दिया,
ऐसी क्या हमदर्दी थी कि,
गम के सहारे छोड़ दिया,

....

सवाल जिन्दगी का न होता तो,
मौत भी कबूल थी,
मलाल दिल का न होता तो,
मोहब्बत भी कबूल थी,

....

है हुश्न तेरा सिर्फ,
मेरी नज़र के काबिल,
किसी और को न दिखा,
इसे ये गाफिल,

....

आपसे जिन्दगी बनी,
आपसे बन्दगी मिली,
मैं बे काबिल था,
आपसे काबलियत मिली,

....

तुझे क्या कहूं, तुझे कैसे कहूं,
न लफ़्ज़ हैं, न जुबान है,
न हौसला है, न हिमाकत है,
बस कुछ भी है, तेरी बदौलत है,

....

रूहानियत की ग़ज़ल आपसे बहती है,
रूहानियत की नज्म आपसे बहती है,
रूहानियत का नगमा आप गाती हैं,
रूहानियत का मंज़र आप दिखाती हैं,

....

रूहानियत की लहरों में,
बहना आपने सिखाया,
रूहानियत की जिन्दगी से,
रूबरू आपने कराया,

....

दिल का जख्म तो यूँ सीने से उभर आया है,
किसीने दिल तोड़ा दिलसे लहू बह आया है,
दिखा न रहे जमानेको पर अब सबने देखा है,
बेवफाईका खौफनाक नतीजा सबने देखा है,

....

आंसू यूँ बह गए,
किसी कि बेवफाई से,
दरिया जैसे बह गया हो,
बड़ी रुखाई से,

....

तोहफा हसीन था,
तेरी नज़र कर दिया,
तू हसीन है,
कुछ तेरी नज़र कर दिया,

....

आखें न छुपाओ हांथों से,
कुछ तो देख लेने दो,
रो रही हैं, कि खो रही हैं,
इतना तो देख लेने दो,

....

रुहानियत की ग़ज़ल आपसे बहती है,
रुहानियत की नज़्म आपसे बहती है,
रुहानियत का नगमा आप गाती हैं,
रुहानियत का मंज़र आप दिखाती हैं,

....

हया नज़रों में होती है,
ये आज मैंने देखा है,
झुकी जब नज़रें उसकी,
हया को मैंने देखा है,

....

बेज़ार दुनिया का फ़साना क्या सुना दिया,
तुम तो यूँ ही नाराज़ हो गए,
चलो थोडा हंसो भी, दुनिया को दिखा दो,
यूँ न हम बरबाद हो गए,

....

हुश्न के बाज़ार में,
दीवानों का नाम होता है,
क्यूँ आये,
यहाँ बस इश्क बदनाम होता है,

....

वफ़ा का जोर था,
बेवफा निकल गया,
प्यार किसी का था,
किसी को मिल गया,

....

हमसे यूँ हुश्न का,
दीदार नहीं होता,
खड़ी हो चुपचाप,
यूँ प्यार नहीं होता,

....

नज़र मिला लो अब तो,
ऊपर तो देखो ज़रा,
कब तब यूँ खड़ी रहोगी,
कुछ तो कहो ज़रा,

....

हया से नज़र झुक गयी,
ओंठों पर मुस्कान बिखर गयी,
सुर्ख गालों की ये शोखियाँ,
दिल में कुछ यूँ उतर गयी,

....

कुछ तो करो,
हुश्न को जो संभाल के रखा है,
न आने दो इसे नज़रों में,
ढांक कर रखा है,

....

सफाक हुश्न ये बेहन्तेहा झुकी नज़रें,
जीने न देंगी,
ये मासूम अदा दिल में,
उतर गयी तो मरने न देंगी,

....

खुसबू बिखेरती हो, सभी के आँगन में,
सुगंधा नाम है, तुम्हारा,
आवाज़-ए-सुगन्ध और फुहार-ए-हंसी पर
इख्तयार है, तुम्हारा,

....

वक्त का इंतज़ार किया,
तुझसे जो प्यार किया,
तुने क्या सिला दिया,
किसी और से मिला दिया,

....

महरूम रहा तेरे इन्तखाब का,
यह सिला मिला मेरे प्यार का,
यूँ तो बेदर्दी न दिखानी थी,
कुछ तो हमदर्दी जतानी थी,

....

चन्द गलियों से,
न गुज़रना होता यूँ रोज़,
शायद मिल जाओ,
किसी मोड़ पे यूँ हर रोज़,

....

किसी के दीवाने से,
ये मत पूंछो, मोहब्बत तुने कैसे सीखी,
दीदार तेरा जब से हो गया,
मोहब्बत जहन में उतर नीखी,

....

चौखट पर तेरी अब,
मैं दम न तोडूंगा,
उठा ले जाऊँगा,
तेरे दर को न छोडूंगा,

....

शमशीरों के साए में,
जो रहना सीख गया,
खौफ कैसा,
मैदानें जंग में जीना सीख गया,

....

मासूम निगाहों का,
आँचल जो उठा है,
निगेहबान हुई निगाहें,
दिल मचला है,

....

ज़माने से नफरत करो,
हमसे क्यूँ करते हो,
हमसे मोहब्बत करो,
ज़माने से क्यूँ डरते हो,

....

न कुछ कहो,
नैनों को कहने दो,
न कुछ सुनो,
सांसों को बहने दो,

....

ऐसे तो उदास न बनो,
दिल के तलबगार न बनो,
गर हो गयी खता हमसे,
उसे अब माफ़ करो,

....

क्यूँ ये परवाना इस तरह जान देता है,
जलती शमाँ में अपने को डुबो देता ये,
गर इश्क में इसका भी बस चलता तो,
जान देने पर शमाँ को मजबूर करता ये,

....

मुबारक हुश्न जो तुने पाया है,
उसका दीदार तो करा दे,
यूँ न जाया कर पर्दा करके,
थोडा मुखड़ा तो दिखा दे,

....

हमारे परवाने को, वो बेदार कर गयी,
हमने कुछ कहा, वो इनकार कर गयी,
हम अब ताला लगा लेते हैं, जुबान पर,
और बैठ जाते हैं, उसके मकान पर,

....

हर लम्बा मोहब्बत का,
कम नहीं होता,
छूट जाती है मोहब्बत,
गम सभी को होता,

....

आँख यूँ नम हुई,
दिल यूँ खोने लगा,
तुम जो छोड़कर गई,
दिल यूँ रोने लगा,

....

जज्बा-ए-हुश्न मैं क्या कहूँ,
तेरे हुश्न ने मुझे मारा है,
तू यूँ क्यूँ न समझ रही,
तेरे नैनो ने मुझे तारा है,

....

ऐसे तो बहुत वक्त हुआ,
उसका दीदार हुए,
आज फिर बैठें हैं,
दिल में एक आस लिए,

....

दरवाज़े पर वो आये हैं,
उन्हें भीतर तो ले आओ,
बड़ी आस लेकर आये हैं,
उन्हें खिलाओ तो पिलाओ,

....

हमसे नज़र उठाओ तो,
ज़माने को देख लो,
अपनी नज़र से न देख सको तो,
हमारी नज़र से देख लो,

....

साफे गम में दुनिया है,
गम की महफिल में मुनिया है,
गर करो राजदार तो,
हर दिल में एक दुनिया है,

....

गुनाहों पर पर्दा पड़ा रहने दो,
राजदारों को राजदार रहने दो,
वक्त खोल देगा सब राज़,
खुदा कर देगा सब गुनाह माफ़,

....

वक्त का वो मंज़र था,
दिल में गडा खंज़र था,
मौत भी न आ रही थी,
दिल को यूँ सता रही थी,

....

कुछ वो परेशान कर रही थी,
कुछ जिन्दगी परेशान कर रही थी,
कुछ संजीदगी ने हाल बुरा किया था,
कुछ आवारगी ने बेपर्दा किया था,

....

हमको तो मंज़ूर नहीं,
दुश्मनी का ये फ़साना,
गर दोस्ती अब कर लो,
फिर दुश्मनी निभाना,

....

गर कबूल थी मोहब्बत,
तो यह फ़साना न बनता,
अफसाना न कहते लोग,
कोई दीवाना न बनता,

....

बस यूँ ही कुछ लिख लेता हूँ,
बस यूँ ही कुछ देख लेता हूँ,
बस यूँ ही कुछ सुन लेता हूँ,
बस यूँ ही कुछ गुन लेता हूँ,

....

न देख तमाशा किसी और का,
तेरा भी तमाशा बन जाएगा,
वक्त बदलते देर नहीं लगती,
तू भी कर देगा कोई गलती,

....

न वक्त कम था, न जिन्दगी कम थी,
पता नहीं किस बात का गम था,
दिल कुछ नम था, आँख कुछ नम थी,
पता नहीं किस बात का गम था,

....

दुआ, गरीब की हो,
आमिर की हो, कबूल होती है,
खुदा सबको देता है,
झोली खाली, किसी की न होती है,

....

बदलते ज़माने,
पर दस्तूर न बदला,
आज भी फितूर,
हूर को देखकर डोला,

....

मुक्कदर लेकर ज़माने में,
आ तो गया हूँ,
सिकंदर बन कर ज़माने में,
समां तो गया हूँ,

....

मुस्कान किसी की ढल रही है,
मुस्कान किसी की जा रही है,
मुस्कान किसी की आ रही है,
मुस्कान किसी की बढ रही है,

....

है तुफ्र जिन्दगी का,
मौत से लडती है,
न हो डर जिन्दगी का,
मौत पर भरी पड़ती है,

....

मकसद ज़माना ढूढता है,
हम तो बेमकसद जीते हैं,
फ़साना जमाना चाहता है,
हम तो अफ़साने में जीते हैं,

....

रहबर जिन्दगी का,
साथ देता रहा,
कट गयी ताउम्र,
एहसास न गम का रहा,

....

हम तो मजबूर थे,
मजरूफ़ थे,
तुम न मशहूर थे,
न मशगूल थे,

....

अपनी बेवफाई का,
किस्सा किसे सुनाये,
जमाना सब जानता है,
किसे रोकर दिखाए,

....

गम जदा था,
कहा न एक लफ्ज़,
अल हदा था,
बहा न एक अक्श,

....

बात ओंठों तक न आने दी,
उसकी बेवफाई की,
बात दूर तक न जाने दी,
उसकी बिदाई की,

....

लोग ओंठों से पीतें हैं,
हम अक्शों से पीते हैं,
लोग पानी से बुझाते हैं,
हम आशुओं को पीते हैं,

....

मोहब्बत तो थी,
पर जताई नहीं,
अपनी तो थी,
पर बताई नहीं,

....

इतनी मदहोश है,
खो दिया अपना होश है,
इतनी सरगोश है,
खो दिया अपना जोश है,

....

गला इसका बड़ा सुरीला है,
स्वभाव से बड़ा शर्मीला है,
आपसे इल्तजा है एक नेक,
दे दो मौका इसको और एक,

....

खाक दिल में मिला दिया,
अब ये कहती है क्यूँ सिला दिया,
गम का मंज़र क्यूँ पिला दिया,
रूह को मेरी क्यूँ रुला दिया,

....

तुमसे जो कहा, जिन्दगी से न कह सका,
तेरे प्यार का अफसाना, किसी से न कह सका,
गम सब सह गया, तेरी बेवफाई का,
इज़हार तक न होने दिया, तेरी बेनराई का,

....

न गम था न गमदार था,
फिर भी दिल ग़मगीन था,
न खुश था न खुशदार था,
फिर भी दिल खुशगीन था,

....

यूँ तो, कुछ न कहना था,
बस यूँ ही चले आये,
कुछ देर, तुम्हे निहारना था,
बस यूँ ही चले आये,

....

राहें बदल रहीं हैं,
आहें-सी भर रही हैं,
आखें नम हो रहीं हैं,
आसुओं से तर हो रही हैं,

....

न दिया, न लिया कुछ,
बस यूँ पड़ा रहा, सब कुछ,
वक्त में मिल गया, सब कुछ,
अब याद आ रहा है, सब कुछ,

....

अब तो हिसाब कर दिया,
दिल वक्त का तलाब्दार कर दिया,
सुना था दिल का फ़साना,
दिल वक्त के हलब्दार दर दिया,

....

इंतज़ार ख़त्म हुआ,
दिल सुकुनदार हुआ,
मददगार प्यार मिला,
तलब्दार यार मिला,

....

पता चला माँ-बाप के प्यार का,
पता चला प्यार के इज़हार का,
पता चला माँ-बाप के दुलार का,
पता चला मजबूर माँ-बाप का,

....

दिया न जला हो,
तो दिल जलाकर देता हूँ,
उसके काम न आ सका,
तेरे काम आता हूँ,

....

जब इश्क परवान चड़ा,
दिल को बुखार चड़ा,
उतरता है न अभी,
तुझको देखा जो कभी,

....

कह दिया ज़माने से,
सुन ले अभी से,
न कहना किसी से,
तुझे पाया नसीब से,

....

कुछ था कहना, कह और दिया,
प्यार था, पर इंकार कर दिया,
ऐसा क्या गिला किया,
ऐसा क्यूँ सिला दिया,

....

जमाना बातों-बातों में बहुत कुछ सुन लेता है,
जमाना बातों-बातों में बहुत कुछ कह देता है,
जमाना बातों-बातों में बहुत कुछ समझ लेता है,
जमाना बातों-बातों में बहुत कुछ बता देता है,

....

किसी को पेश करने का,

तेरा अंदाज़ निराला है,
बहुत सिम्पल, सदगीवाला,
एकदम निराला है,

....

यूँ तो जमाना बहुत,
अफसाने सुनाता है,
कभी लैला, कभी हीर के,
दीवाने बनाता है,

....

सरे बाज़ार तुझे उठाऊंगा,
प्यार किया है, शादी तुझी से रचाउंगा,
ज़माने को यह करके दिखाऊंगा,
कितना दम भर ले जमाना, तुझे तो लेकर जाऊँगा,

....

हर सीने में दिल होता है,
हर जिस्म में जान होती है,
कोई इसे जीने में खोता है,
कोई इसे पीने में खोता है,

....
तेरी चुलबुलाहट,

तेरी बड़-बोली,
तेरी बेतल्खी,
तेरी हंसी-ठिठोली,

....

यूँ तो कुछ न कहा,
यूँ तो सब कह दिया,
ओंठों ने कुछ न कहा,
आखों ने सब कह दिया,

....

इस तरह बेपरवाह घूम रही हो,
हुश्न को लेकर,
ज़माने की नज़र में चढ़ रही हो,
हुश्न को लेकर,

....

यूँ न देखो शक की,
निगाह से,
क्यूँ खड़ी हो,
शक-ए-शुबह से,

....
यूँ गले लगा लिया,

शुक्रिया तेरा, शुक्रिया तेरा,
बस न छोड़ना अभी,
दिल न तोड़ना अभी, मेरा,

....

क्या किस्मत है, जनाब की,
बैठे हैं गोद में,
बड़े गौर से, निहार रहे हुश्न,
बैठे हैं गोद में,

....

तन्हा हो जाती है जिन्दगी,
किसी के जाने के बाद,
फ़ना हो जाती है जिन्दगी,
किसी के आने के बाद,

....

दो घडी साँस रोक लो, खुदा याद आता है,
सांस रुकने के बाद, खुदा से मिल जाता है,
सांस के चंलते, खुदा न याद आता है,
सांस के रुकते, खुदा से मिल जाता है,

....

टूटा हुआ दिल लिए फिरता हूँ,

कोई जोड़ तो दे इसको,
जिन्दगी का टूटा हुआ फ़साना,
कोई जोड़ तो दे इसको,

....

चन्द सासों का सफ़र है, बेकार न करना यूँ,
चन्द लम्हों की डगर है, बेकार न करना यूँ,
चन्द आखों की नज़र है, बेकार न करना यूँ,
चन्द बातों की खबर है, बेकार न करना यूँ,

....

न देखो आईना,
सूरत अपनी पता चल जायेगी,
कर न सकोगे यकीन,
जो मूरत यूँ ढल जायेगी,

....

हल्का फुल्के ढंग से, कह देते हैं ये सब बात,
जिन्दगी के चाहे, कितने मुश्किल हो हालत,
सुलझा देते हैं, सब परेशानियाँ,
भर देते हैं, सब और खुशियाँ,

....

कुछ खफा हो, कुछ नासाज़ हो,
हुई खता हमसे, कुछ माफ़ हो,
जाना था की दिल पर लगेगी,
अपना सोचकर खफा न होगी,

....

हम बेददारी में, कुछ कह गए,
हम बेकरारी में, कुछ कह गए,
हम दिलनसी में, कुछ कह गए,
हम दिलखुशी में, कुछ कह गए,

....

आखें भरी हैं अश्क से, कैसे दीदार करून,
चेहरा छुप रहा है उनसे, कैसे दीदार करून,
पास इतना गुज़र गए, नज़र एक कर गए,
नज़रों से नज़रों में लाखों सवाल कर गए,

....

जाना था जिन्दगी से दूर,
पर न थे हम मजबूर,
हुए जबसे हम मशहूर,
अपने हो गए हमसे दूर,

....

खुश वो मंज़र था,
खुश ये मंज़र था,
दिल में खंजर था,
दिल तो बंज़र था,

....

मौत दबे पाओं आती है,
गम देकर जाती है,
जिन्दगी तो खुशहाली लाती है,
खुश देकर ठहर जाती है,

....

हुश्न दिया हूर को,
नूर भी दिया है,
सहूर दिया हूर को,
मशहूर भी किया है,

....

मकसद है जिन्दगी का, बहुत दूर जाना,
थोडा तो नाम कमाना,
थोडा तो काम करना,
यूँ खाली न बैठना,

....

बाजे बजे,
समां बंधा,
किसी की डोली उठी,
किसी का जनाजा उठा,

....

अपनों को छोड़कर,
दूसरों को पकड़कर,
जिन्दगी में कोई चल पाया है,
इतने दिन किसी का दिल तोड़कर,

....

यूँ तो जमाना किसी का,
दुश्मन नहीं,
गर दोस्त बना लो,
तो कोई रोता नहीं,

....

हर सीने में दिल होता है,
हर जिस्म में जान होती है,
कोई इसे जीने में खोता है,
कोई इसे पीने में खोता है,

....

कुछ तो मोहब्बत का जिक्र हुआ,
कुछ तो माशूक का जिक्र हुआ,
कुछ तो आशिक का जिक्र हुआ,
कुछ तो मोहब्बत का जिक्र हुआ,

....

इश्क की गली,
मजनुओं से भरी हैं,
लैला तू चली है,
आस अभी लगी है,

....

सप्ताहन्त का जमाना था,
मौत को भी अभी आना था,
जिन्दगी को उसे ले जाना था,
थोड़ी देर तो रुक जाना था,

....

मगरूर हसीना,
तुझे है फँसाना,
तेरी मगरुरियत,
तोड़कर है जाना,

....

मदमस्त आखें,
खुली हुई बाहें,
निकलती आहें,
रुकी हुई सांसें,

....

तेरी आदायगी,
और अदावत की दाद देता हूँ,
तू इतना सुलझा है,
कि तुझे सलाम देता हूँ,

....

रहा जाए न, सहा जाए न,
एक पल जिया जाए न,
कैसे कटे अब यह रात,
कोई तो बताये यह बात,

....

तेरे जैसा दोस्त मिले सबको,
दुआ करता हूँ,
नज़र न लगे तुझे किसी की,
दुआ करता हूँ,

....

राहें बदल जाती हैं जब,
मंजिलें मिल जाती हैं तब,
जिन्दगी एक जैसी नहीं होती है,
मेरी अलग, उसकी अलग होती है,

....

जमाना जो कहता है,
खूब कहता है,
ज़माने से जो दूर रहता है,
बहुत ऊब रहता है,

....

न पता था उमर यूँ गुज़र जायेगी,
जिन्दगी सारी तो यूँ कट जायेगी,
आखिरी पड़ाव पर तू नज़र आयेगी,
चलो अब नज़र में तो बस जायेगी,

....

हाल जिन्दगी का नहीं मौत का अब पूछो,
यूँ तो जिन्दगी में हालत बहुत झेले हैं,
तुम तो खेलते हो जिन्दगी से,
हम मौत से बहुत खेले हैं,

....

हमसे यूँ बेवफा हुई जिन्दगी,
खफा कर गयी यूँ पूरी बन्दगी,
मुक्कदर को भी यह मन्जूर था,
उसमे तेरा तो क्या कसूर था,

....

मोहब्बत की बगावत,
बहुतों ने झेली है,
फूलों की जगह,
खून की होती खेली है,

....

हमसे मोहब्बत का,
पता पूछती हो,
मोहब्बत की जानिब तो,
खुद ही रहती हो,

....

यूँ बेजार कर दिया,
दिल को बीमार कर दिया,
कुछ तो कहना था,
कुछ तो करना था,

....

बा खुदा, हुश्न की अदावत में,
आदाब बजा लाते हैं,
प्यार करने वाले,
दुनियाबी अदालत में सजा पाते हैं,

....

रुक तो जरा, नज़र उठा तो ज़रा,
देख तो ज़रा, कोन है सामने खड़ा,
वाह! हुश्न की परि है, जन्नत की हूर है,
नूर खुदा का इस पर है चड़ा,

....

हसीनों का मेला,
जिन्दगी से यूँ खेला,
मौत भी न आई,
जिन्दगी यूँ गवाँई,

....

सफियाने मैं मौजू की,
जानिब खड़ा हो गया,
दरमियाने में तू निकली,
दीदार तेरा हो गया,

....

यूँ तो जिन्दगी कुछ कट रही थी,
कुछ अपनी कुछ उसकी पट रही थी,
हमसफ़र बनकर उसने साथ दिया,
सफ़र का सब सफ़र उसने यूँ बाँट लिया,

....

मैं कुछ बेखबर था,
तू कुछ बेखबर थी,
दुनिया को खबर थी,
हम पर नज़र थी,

....

खुश तो है, पर गम अभी दूर नहीं हुआ,
प्यार तो है, पर इज़हार अभी नहीं हुआ,
बेक़रार तो है, पर करार अभी नहीं हुआ,
वफ़ा तो है, पर बेवफा अभी नहीं हुआ,

....

बेअदबी तुझे अदब सिखा दिया,
बेदर्दी तुझे दर्द का सिला दिया,
बेखुदी तुझे खुद से मिला दिया,
बेहकी तुझे हक़ तेरा दिला दिया,

....

महफ़िल सजी है,
शहनाई बजी है,
दिल तेरा टूटा है,
तू तो बहुत सजी है,

....

इंतज़ार कर रहीं हूँ, सुबह शाम,
दिन-रात काट रहीं हूँ, सुबह शाम,
तुझसे प्यार कर रही हूँ, सुबह शाम,
समझा दिल को रही हूँ, सुबह शाम,

....

बात जब फोन पर होती है,
कानों में रस घोलती है,
दिल में सीधे उतर जाती है,
बस वही जाकर बैठ जाती है,

....

चले गए इस दिल से,
चले गए इस महफ़िल से,
गाफिल जमाना था,
महफ़िल में न आना था,

....

दगा तुमने दिया,
किसी और के लिए,
अब दगा न देना,
किसी और के लिए,

....

दीगर जमाना था,
दर्द का फ़साना था,
देखा तुम्हे जबसे,
दिल ये दीवाना था,

....

किसी का प्यार न छीनो,
तुम्हे दुआ लगेगी,
ढूंढ लो अपना प्यार,
तुम्हे बद्दुआ न लगेगी,

....

खुदा बचाए इस सौतनों की डाह से,
नज़र रखती हैं ये, किसी की आह से,
खुदाबंद इन्हें सजा न दे,
दे दे कोई और पर मेरा न दे,

....

हर वक्त प्यार में, डर यह रहता है,
किसी सौत की डाह का, डर यह रहता है,
छीन लेगी मेरे प्यार को,
कुचल देगी मेरे यार को,

……….

आखें खुली हैं,
दिल बेहाल है,
राहें तकी हैं,
किसी का इंजतार है,

……………..

कितना बेदर्द है जमाना,
मतलब परस्ती का है फ़साना,
बात न बनती देख,
बात न सुनता एक,

……….

खुदा बंद हूँ,
खुदा की बंदगी मिली,
जुदा नहीं हूँ,
खुदा से जिन्दगी मिली,

……….

परवरिश की खुदा ने,
जीने दिया जहाँ में,
सब तरफ खुदा है,
छोड़कर जाऊंगा कहाँ में,

....

इंतज़ार कर रही हूँ,
राह पर आखें गडी हैं,
वो आया तो देखा,
कोई और पास खड़ी है,

....

है दूर जिन्दगी का मकसद,
पर पास है अपनी मोहब्बत,
दूर का जाना यूँ खलता है,
जब पास अपने सब मिलता है,

....

वक्त गुजार दिया,
उसी के इंतज़ार में,
वो आये मिले भी न,
मिले किसी के प्यार में,

....

अश्क से आँशु बहे,
बात दिल की कह गए,
तुझे तेरा प्यार न मिला,
वो किसी के हो गए,

....

आँख मेरी आईना है,
सूरत तेरी देख ले,
उतर जाने दे दिल में,
मूरत अपनी देख ले,

....

जब तेरी डोली उठी,
तब मेरा जनाज़ा निकला,
राह में मुलाकात हुई,
तकाजा वक्त का निकला,

....

हर तरफ शहनाई बजी है,
हर तरफ रोशनाई सजी है,
हर तरफ मजमा लगा है,
हमें तो एक सदमा लगा है,

....

बरबस जिन्दगी गुज़र गयी,
बात क्यूँ मुँह से निकल गयी,
चीज़ यूँ हाथ से फिसल गयी,
इस तरह क्यूँ हमसे रूठ गयी,

....

क्यूँ इतने सख्त बने हो,
कुछ तो दिल की बात सुनो,
क्यूँ इतने तन्हा बने हो,
कुछ तो दिल की बात सुनो,

....

तेरे जिस्म को नहीं, तेरी रूह को देखा है,
चुलबुली है बाहर से, भीतर से तन्हा देखा है,
गम है किसी का, रोते हुए देखा है,
याद सताती है किसी की, गुमसुम सा देखा है,

....

यूँ न बेजार कर,
थोडा तो प्यार कर,
दिल दिया है जब,
थोडा तो इंतजार कर,

....

न हाथ रख सर पर,
न सोच इतना,
जो हो रहा है,
उस पर भरोसा कर उतना,

....

वक्त को गर थामना है,
साँस को रोक लो,
लम्हा वो थम जाएगा,
खुदा तुम्हे मिल जाएगा,

....

दिल को बहलाना आता है उसे,
गम को भुलाना आता है उसे,
घाव को सहलाना आता है उसे,
रब को बुलाना आता है उसे,

....

जिस्म में रूह रहती है,
बात वो कुछ कहती है,
बहुत सुर में बहती है,
बात वो बहुत सहती है,

....

कुछ तो गोर करो,
बात पर जोर करो,
यह तो शोर करो,
नज़र उस ओर करो,

....

ये लड़कियां बड़ी अजीब होती हैं,
नचाती हैं लड़कों को उनका नसीब होती हैं,
समझती हैं सब ये, नासमझ न होती हैं,
बात मन की मनवाना इनकी आदत होती है,

....

है तो इसके दिल में कुछ और,
जता रही है सबको कुछ और,
बात तो जरुर है कुछ और,
बता राही है कुछ और,

....

खुश हुए सब,
खुशवार हुआ समाँ,
यह है किस्मत से,
बंधा हुआ समाँ,

....

हिम्मत होती है,
इश्क वालों में,
इश्क का रिश्क,
उठाने वालों में,

....

दरकार हुई,
पर प्यार कम न हुआ,
तकरार हुई,
पर प्यार कम न हुआ,

....

जिनका ज़िक्र था,
वो तो वह हैं,
सामने ही खड़े हैं,
वो तो वह हैं,

....

तुझे वक्त किया सोचले अभी,
बाद में न पछताना, सोचले अभी,
गर हो गयी किसी की, सोचले अभी,
पायेगी न मुझे कभी, सोचले अभी,

....

हूर है तू जन्नत की,
मैं आदम हूँ जमीं का,
गर तू छोड़कर चली गयी,
रह न पाउँगा कहीं का,

....

हुश्न है तो गुरुर भी है,
सुर है तो सुरूर भी है,
गुमाँ है तो मगरूर भी है,
हूर है तो मशहूर भी है,

....

महक तेरी, तेरे आने की खबर देती है,
चहक तेरी, तेरे चहकने की खबर देती है,
मचल तेरी, तेरे मचलने की खबर देती है,
बहक तेरी, तेरे बहकने की खबर देती है,

....

उसके दिल से धडकता था दिल मेरा,
उसके मन से मचलता था मन मेरा,
उसके तन से महकता था तन मेरा,
उसके ओंठ से फडकता था ओंठ मेरा,

....

जिन्दगी भर तरसने को छोड़ दिया,
जिन्दगी भर दरकने को छोड़ दिया,
जिन्दगी भर सड़ने को छोड़ दिया,
जिन्दगी भर मरने को छोड़ दिया,

....

सुलगता है दिल, सुलगती हैं आखें,
बहकता है मन, बहकती हैं निगाहें,
तरसता है माजी, तरसती हैं राहें,
गुज़रता हैं राही, भरती है आहें,

....

मौत तो आनी है,
जिन्दगी ठीक से जी लेना,
गर न पता हो,
हम से सीख लेना,

....

नज़र आया वो नज़ारा,
तेरे साथ जो देखा,
याद आया वो वक्त,
जो तेरे साथ गुज़रा,

....

यूँ न वक्त गुजारना था,
जिन्दगी को तो जी भरकर जी लेना था,
आरजू तो सब पूरी कर लेनी थी,
मोहब्बत तो थोड़ी कर लेनी थी,

....

वाह क्या हुस्न है,
खुदा की सौगात है यार,
प्यार मिले इसका,
मेरी भी औकात है यार,

....

इस तरह अगर देखोगी,
तो तुम्हारा हुए बिना न रहा जाएगा,
तुझे कुछ करना नहीं पड़ेगा,
तेरा देखना ही सब काम कर जाएगा,

....

हो गई सगाई,
बधाई हो बधाई,
हैं दिल थोडा बेक़रार,
बस शादी का है इंतज़ार,

....

दिया हुश्न तुझे,
इतना क्यूँ इतराती है,
जानिब देख तेरे,
कलियाँ अभी से बल खाती हैं,

....

बफा का है जमाना,
बेवफाई न किया कर,
प्यार किया है तुझसे,
इज़हार तो किया कर,

....

हर फ़साने पर,
ज़माने की मोहर लगती है,
जमाना जो कह दे,
वही अफसाना लगती है,

....

गर बात इल्म की है,
तो जुल्म न कर,
आह न ले किसी की,
यह इल्म तो कर,

....

है मुअज्जम का फ़साना,
जिन्दगी का इतना तराना,
मौत का आगोश में सलाना,
याद रखेगा यह ज़माना,

....

तुफ्लिसे वक्त कट रहा है,
और जिन्दगी कट रही है,
रही बात तेरी मेरी,
अपनी तो अब पट रही है,

....

नाकामी की बात न कर,
कामयाबी मेरे कदम चूमती है,
गर न हो यकीन,
मौत भी मुझसे रास्ता पूछती है,

....

हार न मान सका,
हथियार न डाल सका,
जीतकर मैं जाऊँगा,
लेकर तुझको आऊंगा,

....

नफरत थी मोहब्बत से,
बहुतों को पिसते देखा है,
अब तुमसे मोहब्बत हुई है,
खुद को पिसते देखा है,

....

कुछ तो प्यार था,
कुछ आज और हो गया,
जबसे तुझको देखा था,
मैं तेरा हो गया,

....

हर शक्श मोहब्बत में,
मारा जाता है,
हर शक्श मोहब्बत को,
न पा पाता है,

....

बाज़िबे हुश्न, तेरा ख्याल,
जबसे दिल में आया,
बेकरारी का आलम वो,
अपने साथ में लाया,

....

वक्त बहुत कम था,
बात उसको कहनी थी,
शायद सुन ले वह,
कुछ इस तरह से कहनी थी,

……….

नज़र करूँ एक तेरे,
मोहब्बत का नजराना,
ले लेना, देख तू इस तरह न,
इसको ठुकराना,

……….

सहमी-सहमी सी आ गयी,
रौनक सी छा गयी,
गहमा-गहमी सी हो गयी,
गरमी सी छा गयी,

……….

बात आज एक अजीब हो गयी,
एक हुश्न परि मुझसे टकरा गयी,
सहम गयी, शरमा गयी,
और फिर आखों से ओझल हो गयी,

……….

हो जाए मोहब्बत,
तो इज़हार तेरी आखों से होगा,
तू कुछ न कहना,
प्यार तेरी आखों में होगा,

....

हर वक्त अपनी मोहब्बत का,
अफसाना सुनाता हूँ,
तेरी बेवफाई का नहीं,
अपनी वफ़ा का गाना गाता हूँ,

....

प्यार में, मोहब्बत में,
आखों का बड़ा काम होता है,
नज़ारों में, इशारों में,
आखों का बड़ा काम होता है,

....

दिल हो जाता है बेचैन,
अब नहीं रहता अमन चैन,
आरजू करूँ, इल्तजा करूँ,
तेरे प्यार की खातिर क्या करूँ,

....

हम गम से दूर थे, ग़मगीन हो गए कैसे,
हम नम से दूर थे, नमकीन हो गए कैसे,
हम कम से दूर थे, कमहीन हो गए कैसे,
हम दम से दूर थे, दमहीन हो गए कैसे,

....

रातों की नींद, दिन का चैन,
मोहब्बत में होते हैं सब बेचैन,
करवटें बदलते हैं, इधर-उधर टहलते हैं,
मोहब्बत में होते हैं सब बेचैन,

....

सुस्त हुआ सुस्ताने लगा,
मस्त हुआ मस्ताने लगा,
लस्त हुआ लस्ताने लगा,
कस्त हुआ कस्ताने लगा,

....

यूँ तो जिन्दगी कट गयी,
मौत आनी अभी बाकी है,
यूँ तो जनाज़ा बांध गया,
जान जानी अभी की है,

....

खफा हो लेने दो,
जुदा हो लेने दो,
पास न आने दो,
दूर जा लेने दो,

....

होश खोकर मोहब्बत का फ़साना पाया,
होश आया तो लगा, कोई फ़साने आया,
फंस गया जब, फंसने में मज़ा आया,
निकलना चाहा, पर निकलना न आया,

....

नूर-ए-नज़र, तेरी सिफाकत की जिन्दगी है,
उठा तो नज़र, तेरी हिमाकत की जिन्दगी है,
लगे न नज़र, मेरी हिफाज़त की जिन्दगी है,
उठे जो नज़र, मेरी हकीकत ही जिन्दगी है,

....

तस्वीर तेरी देखी थी,
तुझे नहीं देखा था,
जाँ अभी बाकी थी,
दिल नहीं निकला था,

....

है दूर निगाहें,
है दूर समां,
फिर भी तू,
दिल में समां,

....

तरसती हैं आखें, तसरता है आलम,
बरसती हैं निगाहें, बरसता है बालम,
दरकती हैं सासें, दरकता है सालम,
फरकती हैं बाहें, फरकता है जालम,

....

बा खुदा क्या हुश्न पाया है,
निगाहों को यूँ भरमाया है,
दिल में अरमा जगाया है,
तुझे पाने को ललचाया है,

....

किधर से शुरू करून, किधर से ख़तम करून,
जिन्दगी का फ़साना, कैसे तेरी नज़र करून,
है ख्याल जिन्दगी का, कैसे मुनव्वर करून,
मगरिब के जानिब खड़ा, कैसे तसव्वुर करून,

....
वाह वाह !,

ताबे हयात लग रही हो,
इस लिबाश में भी,
नूर-ए-हयात लग रही हो,

....

तेरे दीवाने हैं, हर वक्त बेगाने हैं,
दूर ही सही, पर तेरे परवाने हैं,
शमाँ तू है, जल्दी है बहुत दूर,
फैलती हैं रोशनी, तेरे नूर की बहुत दूर,

....

सुन लेता हूँ तेरी आवाज़, काट लेता हूँ दिन और रात,
दोस्त पूछते, क्या है तेरी, बेतल्खी के राज़ की बात,

....

इत तदा तो की,
इबादत भी कर लेता हूँ,
प्यार की खातिर,
दुआ भी कर लेता हूँ,

....

सफ़क रोशनी है,

आखें चुंधिया-सी गयी,
नूर है हुश्न का,
चमक बिजली-सी गयी,

....

बड़ा बेजार किया,
कितना इंतजार किया,
तुझसे प्यार किया,
तुने न इज़हार किया,

....

मुक्तलिफ़ सा वक्त था,
मुक्तलिफ़ सी जिन्दगी,
अरमाँ अभी बाकी थे,
जाँ अभी न निकली,

....

सुबकते-सुबकते कब सुबह हो गयी,
पता न पड़ा,
जागते-जागते कब नींद लग गयी,
पता न पड़ा,

....

तेरी चाहत का उसे क्या पता,
अपनी चाहत का भरोसा था,
टूट गया उसका दिल,
जब उसे तुने छोड़ा था,

. ...

क्या अदा है,
मेरी जान, तुझ पर फब्ती है,
तेरी जुल्फों में,
तेरी आखों में वो मस्ती है,

....

क़त्ल कर दिए गए,
कितने अफ़साने मोहब्बत के,
यूँ ही बेबस से हो गए,
कितने दीवाने मोहब्बत के,

....

दानिशे वक्त की तन्हाईओं से,
कोई मुझे निकाल ले,
यूँ ले चल अपने संग,
इस घूमते वक्त को संभाल ले,

....

पेश-ओ-पेश में,
जिन्दगी को अलहदा-सा कर दिया,
किसी को आज थोडा-सा,
यूँ गमजदा-सा कर दिया,

....

क्यूँ आज हुश्न ने,
इससे बेवफाई की है,
ज़माने ने शायद,
इसे कोई दुहाई दी है,

....

मुस्कुराती कली को आज,
मुरझा हुआ-सा देखा,
मदमाती महक को आज,
दहकता हुआ-सा देखा,

....

न ज़ुरूर-ए-हुश्न की, न पैमाईश की थी,
इरादा-ए-इश्क में, न फरमाईश की थी,
वो तो यूँ ही रुसवा हो गए, फ़क्त की वो,
न जाने क्या सुना, हमसे दूर हो गए वो,

....

कोई तो तन्हा था, इस दुनिया में,
कोई तो रुसवा था, इस दुनिया में,
कोई तो थमा था, इस दुनिया में,
कोई तो फासिब था, इस दुनिया में,

....

इख्लायियत में मैंने,
गुस्ताखी क्या कर दी,
तू क्यूँ दूर-दूर रहती,
ऐसी क्या बदमाशी कर दी,

....

वक्त भुला देता है गम को,
पर पल को न भुला पाता,
जब भी तन्हा-सा लम हो,
वो पल पल-पल याद आता,

....

निगाहों से गर क़त्ल किया,
तो फरियाद कैसे करेंगे,
आहों से जो क़त्ल किया,
मेरी जान आहें कैसे भरेंगे,

....

हर घडी यूँ, वक्त को देखता रहा,
वो न आये, वक्त यूँ काटता रहा,
आज क्या बात हुयी, न उनके आने की,
जाने क्या वजह हुयी, उनके न आने की,

……….

चाँद से क्यूँ पूछते हो,
चिरागों को क्यूँ जलने दें,
रौशनी तेरी है बहुत,
बैरागों को क्यूँ मचलने दें,

……….

इतनी उदास बैठी हो,
क्या कोई गम सता रहा है,
थोडा-तो मुस्करा दो,
क्या कोई साथ न दे रहा है,

……….

अब तो दिल बैठा जाता है,
तेरे बिना न रहा जाता है,
तू जल्दी से चली आ रे,
नहीं तो रुखसत हुआ रे,

……….

बद्‌खुलूसवार,
हुकुम सुना तो दिया,
तामीर करे न करे,
ये बता तो दिया,

....

अह्सासे-हुज़ुरियत का इन्तखाब,
बज्में खायियत की जिन्दगी न थी,
उस रूह न निकली हर नज़्म,
तेरी नजरियत की जिन्दगी न थी,

....

इन मह्ताबों से,
मरकजों की खातिर,
इन फब्तीनों से,
नज़रनूरों की खातिर,

....

रूह तो कब की चली गयी,
जिस्म अभी पड़ा है,
न टटोल उसे इस तरह,
क्यों अभी खड़ा है,

....

यूँ जिस्म को, छोड़ते हुए,
किसी की रूह को देखा है,
झटका-सा लगते हुए,
रोमा-रोमा कांपते देखा है,

....

ये मोहब्बत है की फ़ना हो जाती है,
इज्जत की खातिर,
न सोचती न समझती है, मर जाती है,
लाज की खातिर,

....

कशमकश की जिन्दगी में,
इसकी सुनूँ की, उसकी सुनूँ,
दिल की दिल में रहने दूँ,
या सारे जहाँ से कह दूँ,

....

मजबूर दिल का क्या करें,
कदम अपने-आप उधर चलें,
रोकने से अब वो क्या रुकें,
सर-ए-कलम की परवाह न करें,

....

पलट गयी यूँ अपनी जबान से,
देखा न किसी किसी मकान से,
देखते रहे यूँ किसी की दुकान से,
कोई खनक तो टकराए कान से,

....

ये तू है या कोई और है,
तेरे चेहरे से टपकता नूर है,
किसी और का फातिबा लगाकर,
क्यों बहला रही है यूँ, फुसलाकर,

....

सुकून-ओ-हस्क की स्याही,
अब मिलती नहीं,
गम-ओ-फस्क,
कलम आसुओं में डुबाई सही,

....

मह्हबीबों से कह दो, न परेशान करें,
हम बैठे है, अपने यार के पहलू में,
खो गए सहलो-कदम, न इंतज़ार करें,
दिल एक हो गए, यार के प्यार में,

....

इस मेले में सब अपनी-अपनी चीजे बेचते हैं,
कोई हुनर बेचता है, कोई हुनरवाली बेचते हैं,
खरीददार बहुत घूम रहे, मज़े हैं सब ले रहे,
जिसके जेब में पैसे हैं, वो मेला अब देख रहे,

....

चड़ी हुई आखें,
कुछ कह रही हैं,
वो यहाँ नहीं,
किसी और मकाँ की खबर दे रही हैं,

....

नजरिया इंसान का, नज़र से नज़र आ जाता है,
वो कहे भी न, उसकी नज़र में नज़र आ जाता है,
नज़रों की बोली सीखी नहीं जाती,
नज़रों से नज़रें बस ताड़ लीं जाती,

....

शर्मों हया के इस ज़माने में,
इश्क का इज़हार न कर सकते हैं,
नज़रें सबकी हम पर गाड़ी हैं,
चाहकर भी न तुझसे मिल सकते हैं,

....

पैगाम भी चुपके से पढ़ लेते हैं,
सबकी नज़रों से बचके रो लेते हैं,
हुकूक-सा दिल में उठता है,
उसको किसी तरह संभाल लेते हैं,

....

न अब यूँ,
हुश्न छुपा तू,
दीदार तो करा दे,
मुखड़ा तो देखा दे,

....

कुछ राज़ अपनों से भी छुपाने होते हैं,
कुछ काज अपनों से भी छुपाने होते हैं,
दिल की गहराईयों में अकेले होते हैं,
ग़मों की तन्हाईयों संग खेले होते हैं,

....

हुश्न बेरुखी दिखाता है,
लाज से वो डरता है,
अब तो मिलने से भी कतराता है,
याद बहुत आता है,

....

शहंशाहों को भी गम होता था,
उनमें भी दिल होता था,
मसोसकर वो रखते थे,
किसी से न कहते थे,

....

अरमान पालकर दिल में,
जिन्दा अभी तक हूँ,
कब का सुपुर्द हो खाक में,
जिन्दा अभी तक हूँ,

....

इक्तिलाखे यूँ न पसर,
घर ये तेरा नहीं है,
जारी है सफ़र तेरा,
आरामगाह तेरा यही है,

....

तिज़ारते हुकुम उसका माना,
और रूह को फ़ना किया,
मज़े से अब मेरा गुज़र जाना,
किसी को पैगाम न दिया,

....

गम जदा होकर, जिन्दगी भर,
खुशियाँ बटोरता रहा, वक्त जब आया,
तकलीफों से निजात पाने का,
उनसे अपनी रूह को रोशन करता रहा,

....

अब तो न जाने,
हसीनों का हुश्न,
नजाकत कहाँ खो गयी,
सब अब बहाया हो गयी,

....

आहिस्ता-आहिस्ता,
संभल-संभल कर,
नज़रें जमीं में गड़ाकर,
यह कौन जा रहा है,

....

नज़रें ताड़ लेती हैं सब,
जब जिस्म को भेद देती हैं,
कौन-सा दिल खली है,
यह सब जान लेती हैं,

....

देख तो लेने दो ज़रा,
नज़र हमारी तर जाए,
वहाँ से उठकर के वो,
हमारे दिल में बस जाए,

....

तन्हाईओं की अपनी महफ़िल में,
खूब मस्त हैं हम,
कोई कब यहाँ, आने न पाए,
जाम हमारे पीने न पाए,

....

मेरे महबूब, इस तन्हाई में,
तेरा साथ भी, गवांरा न था,
तू कहीं थीं, मैं और कहीं था,
एक-दुसरे का तस्सवुर भी गंवारा न था,

....

तुम्हारा हुश्न भी कम नहीं है,
तुम्हें किसी बात का गम नहीं है,
हर फरमाईश होती तुम्हारी पूरी,
तुम हो खुले ख्यालों से भरी पूरी,

....

इस तरह की अदा,
सिरहन सी दौड़ा जाती है,
न चाहते हुए फ़िदा,
आग सी लगा जाती है,

....

ओह तो तुम ये हो,
बड़ी खूबसूरत हो,
दहकती आग हो,
महकता गुलाब हो,

....

इतना न तरसती थी,
इतना न लरजती थी,
तू तो आज भी,
बेपनाह हुश्न लगती थी,

....

है मासूम कलि,
तू अभी न है खिली,
तुझपर अभी बचपना है,
न है बड़ी,

....

बस यूँ मदहोश,
मेरी जिन्दगी को करते रहना,
मैं कभी होश में न आऊँ,
जतन यूँ करते रहना,

....

वक्त को बस कुछ अन्दाज़ था,
सफ़र का कुछ यूँ आगाज़ था,
न रुके पड़ाव पर कहीं,
जहां रुके मंजिल वहीं,

....

पत्थरों के साए में,
मौत यूँ गुजरती है,
तेरी भी क्या गलती है,
मेरी भी क्या गलती है,

....

तू है ये, तेरा हुश्न है ये,
नज़र न इससे हटती है,
एक बार जहन में आ सकती है,
तेरी तस्वीर आखों में बस्ती है,

....

तमन्नाओं का सागर, बहुत बड़ा है,
यूँ दिल मेरा उससे भी बहुत बड़ा है,
पर मजबूरी भी एक चीज़ होती है,
वो किसी को न कुछ करने देती है,

....

तुमसे बिछड़कर, जिन्दगी को जीना,
अजीब-सा लगता है,
जिन्दगी का हर कोना, खाली-खाली
सुनसान-सा लगता है,

....

क्या हुश्न है, हसीना का,
देखते बनता है,
नज़रें न हटती हैं,
नज़रों से मिलती हैं,

....

इन उड़ती जुल्फों में,
कुछ कहते ओंठों में,
नाज़ुक से हाथों में,
शोखी ये गालों में,

....

तेरे दिल में ही तो आराम लेता है,
तेरे प्यार में ही तो पयाम लेता है,
तेरे जुल्फों में ही तो छाव लेता है,
तेरे इश्क में ही तो थोडा सो लेता है,

....

निगाहों से न पूछो,
वो क्यों रो रहीं हैं,
इशारों ही इशारों में,
कुछ कह रही हैं,

....

सपने गर हकीकत की दहलीज़ को पार करते हैं,
जिन्दगी में वो एक अजीब सा अहसास भरते हैं,

....

जख्म अब भरें कैसे,
मरहम अब लगायें कैसे,
हकीम को दिखता नहीं,
जालिम दुखता भी नहीं,

....

न झुकाओ यूँ पलकें,
हमको भी अलहदा रहने दो,
न छिपाओ यूँ झलकें,
हमको भी गमजदा रहने दो,

....

तापने बैठे हैं,
सर्द रात है,
बतियाँ हो रही है,
रतियाँ यूँ कट रही हैं,

....

बनकर परिन्दा उड़ा,
सारा जहाँ नाप आया,
अपने घोसले को छोड़,
कोई घोसला ना भाया,

....

अहसास की बात,
कभी-कभी सलती है,
जताने की बात,
सबसे बड़ी गलती है,

....

ऐसे तो ऐतबार करें किस पर,
धोखा बहुत खाए हैं,
शक अब हो जाता है सब पर,
मौका बहुत गवाएँ हैं,

....

मकसदों का आलम,
रास्तों की थकान मिटा देता है,
पहुँच जाता है,
मंजिल पर सब कुछ यूँ भुला देता है,

....

तेरी सोहबत में,
इश्क का नशा चढ़ गया,
लोग कहते हैं,
इसे इश्क का भूत चढ़ गया,

....

यूँ न अफसाना लिखा करो,
किसी के प्यार का,
उन्हें भी कुछ,
रख लेने दो अपने यूँ इज़हार का,

....

वक्त क्या-क्या,
दिखा जाता है,
वक्त क्या-क्या,
सिखा जाता है,

....

उदास थी महफ़िल,
गमजदों का जमावड़ा था,
सब के दिल टूटे थे,
यही तो एक मुहावरा था,

....

इस तरह तन्हाईओं में,
सनम को याद किया जाता है,
कुछ तो अपना है,
जिसको शेयर नहीं किया जाता है,

....

बस यूँ ही कुछ न कुछ चलता रहता,
जिन्दगी का हर पल गुज़रता रहता,
कुछ खास-सा न हम कर पाते,
गर वो हमारा साथ न निभाते,

....

न ख्याल था उसका,
खुसबू जो उसकी उडी न होती,
डूबा था अपने में,
पास जो न वो खड़ी होती,

....

इन चन्द लम्हों को, तो जी लेने दो,
डूब जाने दो, इनमें समां जाने दो,
न बाहर निकालो, अब तो बहने दो,
यूँ जिन्दगी को अब, बीत जाने दो,

....

इन ख्यालों को अब मरने न देना,
जिन्दा रखना आंसू पिलाकर,
एक दिन इन्हें भी जिन्दगी दे देना,
यूँ न जाना किसी को भुलाकर,

....

यूँ तो शायर होना,
हमारे नसीब में नहीं,
यूँ ग़मों का होना,
हमारे नसीब में नहीं,

....

वाजिब वजह न मिल रही थी,
कोई बहाना कर लूं,
तेरे दीदार के लिए,
रोज़ तेरे घर आना-जाना कर लूं,

....

पास गम भी न था,
की तुझे दे सकूं,
आस आशुं भी न थे,
की तुझे रुला सकूं,

....

उफनती सी नदी में,
तैरने की मजबूरी है,
इस तरफ बेगैरत है,
उस तरफ मजदूरी है,

....

आज अहसास हुआ,
आज कुछ खास हुआ,
कट गया ज़माने से,
रह गया रूहाने में,

....

तुने मरहूम मोहब्बत से,
मुझे जो किया,
देखना एक दिन बनेगा,
तू मेरा पिया,

....

बड़ी बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहा हूँ,
मन ही मन उसका चेहरा बुन रहा हूँ,
कैसे वो लगती होगी,
जो आज सफ़र मैं मेरे साथ होगी,

....

अब इंतज़ार हुश्न का नहीं करते,
जबसे एक बार दिल टूट गया,
यूँ बस बैठे रहते है,
कोई जबसे से छोड़कर गया,

....

बा मुश्किल टूटे दिल को पिघला कर फिर
से जमाया था,
अभी ठण्डा भी न हो पाया था, किसी ने
फिर से नज़र का तीर चलाया था,

....

दिलबर ने दिल में,
जगह थोड़ी सी दी है,
गुज़ारिश न की मैंने,
बस नज़र थोड़ी सी मिली है,

....

कोफ़्त न निकाल किसी पर,
आज कोफ्ता खिलाया है,
कोफ़्त गर मिटानी है,
कोफ्ता उसे जरूर खिलाना है,

....

आज़माइश जब भी करोगे,
तो पछताओगे,
अभी तो खरा उतरेगा पर बाद में
पछताओगे,

....

तखल्लुस और रख लिया है,
इस टूटे हुए दिल का,
रहना है इस महफ़िल में,
क्यूँ जाहिर करें जख्म दिल का,

....

पर्वतों से पूछो हवाएं,
क्या होती हैं,
गुज़र जाती हैं, महका जाती है,
फिर चली आती हैं,

....

बहती हैं नदियाँ,
तो सागर को क्या सोचना,
बहते हैं जज़्बात,
तो शायर को क्या सोचना,

....

सोचकर गर दिल लगाया,
तो प्यार कैसे पायेंगे,
समझकर गर दिल लगाया,
तो बहक कैसे पाएंगे,

....

अब समझदारों की दुनिया है,
न अब दिलदारों की दुनिया है,
हर काम अब हिसाब से होता है,
दिल की जगह अक्ल से काम होता है,

....

रुमन्दर परवीनों से यह मत पूछो,
कहाँ-कहाँ जख्म खाए हैं,
अभी तो मलहम भी नहीं लगाया,
वो फिर जख्म देने आये हैं,

....

दिल की राह,
अक्ल ने ले ली,
हुश्न की राह,
शक्ल ने ले ली,

....

राहें छूट गयी बहुत दूर,
अब तो बे राहों पर चलना है,
हमसफ़र अब कोई नहीं,
अब तो कदम-कदम पर संभालना है,

....

एक नज़र, किसी का भी,
यूँ काम तमाम, कर देती है,
तीर क्या, तलवार क्या,
बन्दूक को भी आराम देती है,

....

कुछ यादें अपनी,
दूसरों को न देंगे,
उन्हें रोज़ याद करके,
जिन्दगी यूँ जी लेंगे,

....

मौसम बदल रहा है,
दिल अब थम रहा है,
सावन अब आ रहा है,
धड़कन बड़ा रहा है,

....

चल पड़ी शमशीर,
दिया गला चीर,
फव्वारा उठा खून का,
जाने न पीर,

....

इतना न गम था,
कुरेद-कुरेद कर बड़ा लिया,
उनपर था गुस्सा,
अपना तमाशा बना लिया,

....

कब उठा जनाजा,
कब कब्र में चले गए,
सुकून से अब सो रहे,
बेफिक्र यूँ हो गए,

....

अब तो ख्वाइश है कि,
जी भर के जी लूं,
ग़मों को बहुत पिया,
अब ख़ुशी से जी लूं,

....

हर मुसीबत की जड़,
ये निगाह होती है,
तेरे हुश्न का न कसूर,
ये तुझपे फ़ना होती है,

....

महकती फिजाओं का आलम,
बसाया है यूँ तुमने,
थोड़ी खुशबू मुझे लेने दो,
मदहोश किया यूँ तुमने,

....

नज़र यूँ नज़र से मिली,
इशारा कुछ यूँ कर गयी,
वो मेरे पास से गुजरी,
नज़ारा कुछ नज़र कर गयी,

....

आसमानों की सैर,
अब होने लगी,
जिन्दगी यूँ जोर,
जब पकड़ने लगी,

....

हर हुश्न यहाँ फ़ना,
होना चाहता है,
हर इश्क यहाँ फ़ना,
होना चाहता है,

....

चन्द इशारों से चन्द घड़ियाँ यूँ गुज़र जाती हैं,
चन्द फूलों से चन्द कलियाँ यूँ खिल जाती हैं,
चन्द गालों से चन्द लडियां यूँ लटक जाती हैं,
चन्द हुश्नों से चन्द हसीनाएं यूँ निखर जाती हैं,

....

आखों से आखों में उतरना जो चाहा,
सांसों से सांसों में, सामना जो चाहा,
आहों से आहों में, बदलना जो चाहा,
बाँहों से बाँहों में, भरना जो चाहा,

....

ये तो मयखाने में भी न मिलती थी,
जो तेरी आखों ने पिला दी,
अब क्यूँ भटकें मयखानों में,
जब मिल जाती है, तेरी निगाहों में,

....

आखें मिली वक्त रुक सा गया,
सांसें मिली वक्त रुक सा गया,
आहें मिली वक्त रुक सा गया,
बाहें मिली वक्त रुक सा गया,

....

हसरत जहाँ में आखों को,
हुश्न देखने की होती है,
जिधर भी हुश्न दिखता है,
ये नज़र उधर होती है,

....

बड़ा अजीब ख्याल था,
सब के दिल में मलाल था,
कोई कुछ कह न रहा था,
माहोल सब बयाँ कर रहा था,

....

यूँ गर हमसे बेवफाई करो,
मेरे मज़ार पर न रुसवाई करो,

....

ऐसे मोहब्बत करोगे,
तो पछताओगे,
भूल जाने की जितनी कोशिश करोगे,
उतना याद आओगे,

....

अब वो यहाँ न आयेगी,
अब वो तेरे से दूरी बनायेगी,
बातें तेरी उसको न लगती हैं अच्छी,
उसे तारीफ़ लगती है, अपनी अच्छी,

....

अब तो यादों का आईना है,
दिखती है शक्ल तेरी उसमें,
मुझे मेरी याद भी न आती है,
बस तू नज़र आती है तेरी उसमें,

....

यूँ न समझ,
अब हुश्न रोता नहीं है,
आँशु तो टपकते हैं,
पर दिखते नहीं है,

....

नज़रें झुकाकर, चेहरा दबाकर,
किधर चल दिए,
हम भी पीछे से आते हैं,
कदम तो धीरे से धरिये,

....

हर मुसीबत की जड़,
ये निगाह होती है,
तेरे हुश्न का न कसूर,
ये तुझपे फ़ना होती है,

....

बहुत दिनों से तलाश है उसकी,
कैसे मैं पूंछू पतिया यूँ उसकी,
क्या सोचेंगी सह्कर्मियाँ ये उसकी,
कौन है क्यों पूछता है बात ये उसकी,

....

आईने में गर दुनिया को,
देखो तो उल्टी नज़र आती है,
आईने के सामने आईना,
रख दो तो सीधी नज़र आती है,

....

ऐसे सफाके प्यार से,
तुझे मैं क्या समझाऊँ,
तेरा इश्क भी तो है कितना कातिल,
तुझे कैसे मनाऊँ,

....

आफरीन-ए-मोहब्बत तेरी,
खुलूश-ए-गयास है तेरी,
न उफान ले ये जहमी,
न बने तू यूँ बहमी,

....

उन्होंने गम दिया,
तन्हाई भी दी,
क्या करें अब हम,
मोहब्बत हमने ही की,

....

यूँ ही तनहा-सा खड़ा था,
अपने गम में डूबा हुआ,
याद उसकी सताती थी,
उसी की याद में खोया हुआ,

....

यह मत पूँछ, जख्मों को क्यूँ,
संभाल के रखा है,
अरे याद उसकी दिलाते हैं,
तभी तो पाल रखा है,

....

घबराते दिल से,
बात करते हो,
कंपकपाते हैं ओंठ,
नज़रों से मिलते हो,

....

चलो कदम पे कदम धरो,
इश्क की खुदी पे कदम धरो,
डरो मत कुछ होगा नहीं,
हाँ पर तू खुद रहेगा नहीं,

....

गोशे-गोशे वो सो रहे थे,
बत्ती हमने बुझा दी,
न जाने कब सुबह हो गयी,
हलके से उनकी नींद जगा दी,

....

ये चले हुश्न की परी के पीछे-पीछे,
वो उडती थी, ये दौड़ते थे,
उसको पा लाने का दम भरते-भरते,
न हाथ आयी वो, ये रो-रो पड़ते थे,

....

सजा दो दरबार,
आज हुश्न आनेवाला है,
हुश्न की रौशनी से,
आज दरबार रौशन होनेवाला है,

....

अब कुछ ख़त लिखने दो,
खता हुयी जो उसकी सजा मिलने दो,
न माफ़ी अब मांगने दो,
सजा सारे जिन्दगी भुगतने दो,

....

चलो अहसास-ओ-उल्फत तो हुयी,
उनके दिल में कुछ हरकत तो हुयी,
नज़रों से कुछ कहानी बयाँ तो हुयी,
यूँ मुलाक़ात की कुछ आस तो हुयी,

....

आजमाते हो हुस्न को,
देखो ये किसी का नहीं होता,
देख लो आजमाकर,
हमेशा हुश्न बेवफा नहीं होता,

....

जहान-ओ-जिज्बत की जिन्दगी से,
अब आसरा एक आस से बाकी है,
तुम तो चली गयी छोड़कर गोचे से,
बस हमारी यादों का बासरा बाकी है,

....

ये मासूम हुश्न,
निगाहों से कितनों का कत्ल कर देता है,
गवाह भी कहाँ से लायें,
जख्म जो दिल में कर देता है,

....

आफरीन आफताब की रौशनी,
से रौशन एक पारी आज दिखी,
क्या हुस्न था, क्या हसीना थी,
पर वो किसी और के साथ दिखी,

....

घुटते-घुटते से पल,
एक सांस लेना दूभर हो जाता है,
घुटनों के बल रहना पड़ता है,
हर पल दूभर हो जाता है,

....

जिस्म हमने देखे नहीं आज तक,
लैला-मजनू, हीर-रांझा, सीरी-फरहाद, के,
पर रूहें उनकी जिन्दा हैं अभी तक,
कितनी पाकीदगी रही होगी इश्क में उनके,

....

वो नज़र से नज़र मिलने का अहसास,
बदन में फुरफुरी-सी दौड़ जाती है,
नज़र से नज़र मिलने पर,
नस-नस में खून-ए-दौरा बड़ा जाती है,

....

मुझे तेरे जिस्म से नहीं तुझसे मोहब्बत थी,
रूह-ए-आलम तुने अपना वादा जो है बदला,
साथ-साथ न गयी इंतज़ार न किया मेरा,
मेरे से पहले अपना जिस्म क्यूँ है बदला,

....

ये दीवानगी रूह ही,
समझ सकती है,
जिस्म तो एक जरिया है,
रूह न मर सकती है,

....

वो चेहरा छुपकर इस तरह भागे की,
जैसे नज़र हमारी लग गयी हो,
शर्म-ओ-हया से चेहरा छुपाया की,
जैसे हमारी न होना चाहती हो,

....

रूहें जब मिलती हैं,
निगाहें जब मिलती है,
वक्त कितना भी लगे,
पर मोहब्बतें सब मिलती हैं,

....

दीदार न हो सकें,
हुश्न की शहजादियों के,
तभी तो बादशाहों ने,
दीवारें बनाई हैं,

....

आहें भरी तन्हाई में,
याद उसको किया,
कल जिससे नज़र मिली,
गौर उसकी नजाकत पर किया,

....

यूँ गर नज़रें न मिलती तो,
उल्फत न होती,
मोहब्बत न होती,
तुम हमारी न होती,

....

अब न हुश्न-ओ-अफ्लायत की बात कर,
अब न जिस्म-ओ-जिस्मायत की बात कर,
देखे ज़माने गर दूर से हुश्न के नज़ारे,
अब न मोहब्बत की बात कर,

....

नुवार-ए-नुक्ते से, दिल से जीते हैं,
अक्ल की बात से, दूर रहते हैं,
दुनिया में यहीं-कहीं रहते हैं,
दिल-ए-दीवानगी के गम पीते हैं,

....

इन आखों की सिफई गर पढ़ लो,
तो जन्नत नसीब होगी,
इसी जमीन पर यह हुश्न परी,
तेरी शरीक-ए-हयात होगी,

....

न गम होता तो, नगमा कौन कहता,
नग न आम होता, तो नगमा कौन कहता,
नग न पाने का तो गम है,
तभी तो गम में नगमा कहता है,

....

जीना किसी-किसी को नसीब होता है,
किसी की बाहों में,
कोई घुट-घुट कर जीता है,
जिन्दगी की राहों में,

....

पास आते-आते,
कदम रुक से जाते हैं,
क्यूँ वो अनजाने से दर से,
सहम से जाते हैं,

....

कर गयी जो दिल्लगी,
वो आज तक याद आती है,
अपनी न हो पायी,
किसी और के साथ अब जाती है,

....

यूँ ख़ुशी-ख़ुशी अब तो वक्त बिता रहे हो,
अच्छा है, किसी के काम तो आ रहे हो,
दे रहे उसे ख़ुशी, गम अपने छिपा रहे हो,
क्यूँ अपने दिये को, आसुओं से जला रहे हो,

....

है साफ-ओ-गम इस जिन्दगी में सबको,
तो क्या हँसना भूल जाएँ,
हँसते-हँसते क्यूँ न इस गम के पलों को,
ख़ुशी-ख़ुशी झेल जाएँ,

....

है हार गर जिन्दगी में,
तो जीत भी दूर नहीं,
थोडा और जोर लगाओ,
तो मीत भी दूर नहीं,

....

सनम वो जहमत क्यूँ उठाते ही,
गुलाम हाज़िर है,
तलवार न उठाओ कलाई नाज़ुक है,
गर्दन हाज़िर है,

....

है ज़माने-ओ-अक्त से वक्त की कुछ तस्वीरें,
धुंधला-धुंधला-सी जाती हैं वक्त की कुछ लकीरें,
याद कर-कर के रुवाई-सी आती है,
धुंधली-धुंधली-सी कोई तस्वीर बन जाती है,

....

है हर सरोजा-ए-वक्त का दामन न पकड़,
दीखता है क्या तुझे किसी का मन न पकड़,
बीते-बीते इस जिन्दगी को वक्त बहुत हो गया,
आज तक न रौब आया, रुतबा भी खो गया,

....

निगाह-ओ-इसखरत से,
दिल छुपा लेता हूँ,
नज़र न लड़ता किसी से,
अंजुमन ताड़ लेता हूँ,

....

टक्कर-ओ-जहमत से थोडा गौर कर लो,
हम पर भी नज़र कर लो थोडा गौर कर लो,
न यूँ फेरों निगाहें, एक उसी से तो हैं आहें,
आरजुएँ पर उससे हैं, न दूर करो राहें,

....

तेरी सहफतों से अपनी मुद्दतों तक,
एक चीज़ न देख पाया,
तू रोज़ चली आती है, इसी गली से,
तुझे रोज़ न देख पाया,

....

न अब वो जज़्बात रहेंगे,
न अब वो बात रहेंगे,
न अब वो हालत रहेंगे,
न अब वो मुलाकात रहेंगे,

....

इम्दियादे हकीकत तुझे क्या बताऊँ,
क्या दिल है क्या जान है,
एक बार तू भी देख ले,
क्या दिल है, क्या जान है,

....

पास आते-आते, वो रुक-सी जाती है,
न जाने वो, क्यूँ तक-सी जाती है,
दिल के अरमाँ को, ढक-सी जाती है,
फिर दूर निकल जाती है,

....

हमसाया तेरे प्यार का,
अब जो मिल गया है,
किस्मत बदल गयी है,
मुकद्दर बदल गया है,

....

अपने को मज़ाक बना दिया,
दुनिया की नज़र में,
दुनिया ये सोचती है,
पागल है, किसी के असर में,

....

मर गए, मिट गए, तेरे दिल में बस गए,
गर तू अपना दिल भी चीरे, मर हम गए,
तो कैसी ये सिफातन होगी सनम,
दिल तुम्हारा था, बस हम गए सनम,

....

कैसे रूहें एक-दुसरे से जुडी होती हैं,
कैसे रूहें एक-दुसरे को खींच लेती हैं,
कैसे रूहें एक-दुसरे को पहचान लेती हैं,
कैसे रूहें एक-दुसरे के पास होती हैं,

....

जम्ज़ा-ए-मकलियत,
हुश्न को इस तरह रुसवा तो न कर,
ये आये है पास तेरे,
इसको इस तरह से रुखसत तो न कर,

....

सह्फन-ओ-अख्लियत,
आरमान मेरा दिल में उतार ले,
रोज़ इसी तरह से मिलेंगे,
वक्त ज़रा निकाल ले,

....

हम-ओ-अमज़ा,
शर्म तुझे बहुत आती है,
निगाह तेरी झुक जाती है,
गाल तेरे लाल कर जाती है,

....

ऐसा तो मोहब्बत में,
हर बार होता है,
मासूक कहीं रहती है,
आशिक कहीं रहता है,

....

यूँ न आओ मेरे पहलू में,
जाने का फिर दिल न करेगा,
बैठ गए, गर एक बार,
उठने का दिल न करेगा,

....

ऐसे क्यूँ सताते हो,
रोज़-रोज़ ख्वाबों में क्यूँ आते हो,
मिल लो एक बार रूबरू,
रोज़ ख्वाबों में क्यूँ बतियाते हो,

....

यूँ न हमसे सफ्न हो,
जिन्दगी रूठ जायेगी,
दिल टूट जाएगा,
जान निकल जायेगी,

....

ये बरबादियों का जहाँ,
क्यूँ तुने बना लिया,
इसको तो दूर कर,
ग़मों को क्यूँ अपना लिया,

....

न पूछो जमीनों से,
की सूखा कब-कब देखा,
आसमान से प्यार न मिला,
रूखा-रूखा देखा,

....

भरोसा यूँ था तेरे प्यार से,
इसलिए वफ़ा न कर पाया,
कल किसी और से,
प्यार करते हुए तुझे जो पाया,

....

देख ज़माने की हकीकत से,
न हूरे इल्म पाया है,
देखते-देखते ज़माना,
बस रूहे इल्म पाया है,

....

देखो यूँ न मोहब्बत का आशियाना तोड़ो,
यह घराना यूँ न छोड़ो,
तिनका-तिनका दिल का जोड़ा है,
आशुओं की रस्सियों से हमने जोड़ा है,

....

नज़र न की जिस्म पर,
रूह कांप गयी,
नज़रों से नज़रें मिली,
नज़रें भांप गयी,

....

तू हुस्न कुछ,
सफालियत से कहता है,
तेरी रूह कुछ कहती है,
तेरा जिस्म कुछ कहता है,

....

अब न चाहते हैं,
किसी हुश्न को, किसी हसीना को,
अब तो खुदा को चाहते हैं,
बहाते हैं पसीना को,

....

सैफालियत की वजाहत से,
वफ़ा करना क्यूँ छोड़ दूँ,
सोच कर जब मोहब्बत नहीं की,
वफ़ा करना क्यूँ छोड़ दूँ,

....

लिख्लियाते तरन्नुम में,
गौर से अब कुछ तो कहो,
लम्हा यूँ बीता जा रहा है,
कुछ तो तन्हाई में कहो,

....

उसने देखा, दूर से, तिरछी निगाहें करके,
पहचानने की कोशिश की, जोर दे करके,
यूँ ही घबडाहट में सुकून, दिल का छिन गया,
बात बन भी न पायी, पूरा दिन निकल गया,

....

सफ़र में जब साथ हो,
किसी हसीना का,
बैठ जाए पास,
भीग जाए बदन पसीना का,

....

मेरे आने तक, वो न रुक सकी,
चली गयी, दो लफ़्ज़ न कह सकी,
आंसूं भी बहे होंगे, दिल भी बैठा होगा,
न जाने वो इतनी देर क्यूँ कर बैठा होगा,

....

यूँ नमक छिड़क दिया जख्मों पर,
क्यूँ इतनी नफरत दिखाई,
ऐसा क्या गुनाह कर दिया,
जो इतनी जली कटी सुनायी,

....

तेरे इखिनियाते में,
अब खुतूत पेश करता हूँ,
है तू बहुत दूर,
तुझे ख़त से सलाम करता हूँ,

....

मेरे अरमान अब भी सुलगते हैं,
हवा न दो आग उलगते हैं,
दिल में छुपा रखे हैं,
ये शोले अब भी भड़कते हैं,

....

रूहाले इम्जा अब बात कर जा,
न यूँ खफा होकर जा, कुछ दूर तो चलना है,
है आफ़ताब सा दामन,
न तू उधर जा, न तू इधर जा,

....

तब तुझे मह्ताबों से,
महकता ये जहाँ दिखाई न देगा,
जब टूट जाएगा दिल तेरा,
तुझसे कोई बेवफाई कर लेगा,

....

यूँ गर तुम किताबें को,
पड़ना छोड़ दो मैं कुछ कहूं,
उतर जाए तेरे जिस्म में,
जहन में ऐसा कुछ कहूं,

....

तारीफ़-ए-अंजुमन,
लिफाफा न खोल अभी से,
बंद रहने दे,
चन्द रोज़ में बात होने लगेगी दिल से,

....

इत्तफाकन कोई मिल जाए तो,
जाहे जिज्बत में महक सी उठती है,
कुछ दूर वो चलती है,
कुछ दूर उसकी महक चलती है,

....

शान-ओ-शिफस्त,
ये वक्त अब मजबूर कर देता है,
रहना चाहता हूँ पास,
मगर दूर कर देता है,

....

सारी सिदायफ्तें भुला,
तेरे पीछे-पीछे चला,
तू न जाने कहाँ खो गयी,
मैं तुझे ढूडने चला,

....

धोखा ये हुश्न का मिला,
बात कुछ भी न बनी,
दिल यूँ टूट गया,
वो अपनी भी न बनी,

....

खुलूस-ओ-चमन से,
महकती फिजा का,
दर एक-एक महके,
हर इल्तजा का,

....

नूर-ए-अख्लाहत से,
वजह न पूछो देर से आने की,
आकर उन्होंने बात तो रख ली,
मेरे बुलाने की,

....

इश्क परवाह न करता है,
किसी वजाहत की,
दरिया में उतर जाता है,
परवाह नहीं हिफाजत की,

....

गम के बाज़ार में,
खुशी मिल जाती तो,
पार में दरिया न करता,
तू यही मिल जाती तो,

....

संजीदा हुश्न कितना,
खूबसूरत लगता है,
आखों में हया,
चेहरे पर नूर टपकता है,

....

मेरे अरमान अब भी सुलगते हैं,
हवा न दो आग उलगते हैं,
दिल में छुपा रखे हैं,
ये शोले अब भी भड़कते हैं,

....

अब न करो वक्त से,
ये जुस्तजू,
बैठे रहने दो पहलू में,
न करो गुफ्तगू,

....

तब तुझे मह्ताबों से महकता,
ये जहाँ दिखाई न देगा,
टूट जाएगा,
दिल तेरा तुझसे कोई बेवफाई कर लेगा,

....

गम तो शायद,
फ़ना न हो सका,
हम फ़ना हो गए,
वो सब कह सका,

....

हमसफ़र हैं अब,
ठुकराए हुए दीवाने,
कोई कुछ न कहता है,
सब के सब परवाने,

....

आसुओं की स्याही में डुबोकर,
अपना जिन्दगीनामा लिखा,
दिखाई उसे ही देगा,
जिसने इस तरह बेवफाई का गम झेला,

....

इनकी यह तिकड़ी कितना छा गई है,
हर किसी के मन को भा गई है,
हर किसी के दिल में समां गई है,
हँसते-हँसाते कितना इल्म थमा गई है,

....

गज़ब आशिकों का मिजाज़ देखो,
ये रोज़ आशिकी में मरा करते हैं,
कभी इनसे तो कभी उनसे,
आशिकी की किस्से कहा करते हैं,

....

उनकी निगाह से गर नज़र मिल जाए,
बिन कहें नज़र का असर नज़र आए,
हम उनको वो हमको देखते रह जाए,
निगाह के तार से दिल से दिल जुड़ जाए,

....

आईये आपको,
कुछ दूर तक छोड़ दूँ,
घबराईये न,
आपको तन्हा न छोड़ दूँ,

....

वो जो उधर से जा रहे हैं,
दूर से वो नज़र आ रहे हैं,
बातें किसी से बतिया रहे हैं,
उठ के जल्दी क्यूँ जा रहे हैं,

....

आज दिलनसी का,
चेहरा नज़र आया,
बड़ी आस लगी थी,
कितने दिनों बाद देख पाया,

....

कहने को तो जिन्दगी में है,
बहुत कुछ,
जब बात जुबां न आए,
तो क्या कहें कुछ,

....

वो दिल की दिल में रख लेते हैं,
हम जुबां से सब कह देते हैं,
बस एक गुनाह कर लेते हैं,
ज़ज्बात अपने जाहिर कर देते हैं,

....

वो निकल जाते हैं, जिन्दगी से ऐसे,
जैसे की कभी आए ही न हो,
उनका अहसास भर रह जाता है ऐसे,
जैसे की अभी मिल कर गए हो,

....

कुछ पल जो भूले नहीं जाते,
उनके साथ बिताये हर पल याद हैं आते,
न जाने वो कहाँ होंगे,
क्या पता उनको हम याद होंगे,

....

सुफन जब कुफन बन जाती है, न जाने क्या-
क्या बयाँ कर जाती है,
जो छिपाना होता है, सभी से दिल-ए-हाल
वो भी यूँ बयाँ कर जाती है,

....

दिन-ओ-दिन उनको मैं याद करता चला,
उनकी ही याद में दिन-रात काटता चला,
पल-ए-वक्त उनकी ही याद से भरता चला,
जिन्दगी-ए-वक्त में कहीं मिल जाएँ भला,

....

वो आखों में बसी उनकी यादें,
रोज़ ताज़ा कर लेता हूँ,
इस तन्हा-सी जिन्दगी में,
रोज़ उन्हें याद कर लेता हूँ,

....

हम सफ़र यूँ जिन्दगी में,
तन्हाई को बना लिया,
ऐतबार अब न किया,
यूँ बेवफाई ने ठुकरा दिया,

....

यूँ ही वक्त-ए-बेवक्त,
उसकी याद आ जाती है,
वक्त थम जाता है,
आँख कहीं ठहर जाती है,

....

सहज-ए-हकीकत में,
वक्त गुजरता कैसे है,
एक-एक लम्हा,
रुका-सा सरकता जैसे है,

....

वो इस तरह से हमारी जिन्दगी से चले गए,
जैसे कि आये ही न थे,
हमें इस तरह छोड़ दिया कि, संग हमने कुछ
दिन बिताये ही न थे,

....

गुज़रती आहों की गर्माहट से,
दिल अपना गर्म कर लेता हूँ,
कब का ठण्डा हो चुका होता,
दिल अपना नरम कर लेता हूँ,

....

रूबरू-ए-दिल, जिन्दगी को कर दिया,
अब हाल पूंछते हो, जब दिल किसी का
कर दिया,

....

दिल-ए-निगाह से बचकर कैसे जिन्दगी
गुज़ार लेते हैं लोग,
इन हसीनाओं से बचकर कैसे जिन्दगी
गुज़ार लेते हैं लोग,

....

राजा-ए-दिल सभी होते हैं,
दीवानगी से पल्ले सभी ने झाडे होते हैं,
न जाने दिल की किस गहराई में,
किस-किस के दिल गाड़े होते हैं,

....

इंतज़ार-ए-हातिब से,
जिन्दगी बेकसार गुजरी,
जिधर भी नज़र गुजरी,
उसका इंतज़ार गुजरी,

....

वो मुड़कर मुस्कुराकर चली गईं,
उनकी मुस्कान दिल में उतर गई,
जब भी आँखें हमारी बंद-सी हुईं,
याद उनकी दिल में घर-सी गईं,

....

उनकी वो तन्हाई,
आज मैंने गौर से देखी,
हम साथ रहते,
उनकी तन्हाई आज देखी,

....

उसकी वो दिल-ए-आह की टीस,
आज भी चुभती है,
दिल पत्थर कर लिया है,
पर पत्थर में भी घुसती है,

....

खींच लाती है,
उसकी पाक मोहब्बत उसे उनके पास,
वो कितना भी दूर रहें,
रहेंगे हमेशा उनके खास्मखास,

....

कदम भारी,
अपनी ही लाश लिए घूमता हूँ,
बेवफाई उनकी देखी,
न आश लिए घूमता हूँ,

....

वो पहली मुलाक़ात का अहसास,
आज तक जहन में सहेज रखा है,
जब भी तेरी बेरुखियायी होती है,
उन्ही लम्हों को याद कर रखा है,

....

अब हमें तन्हा-सा छोड़कर,
कब तक रहोगे यूँ ही,
याद तो हम आयेंगे तन्हाई में,
कब तक रहोगे यूँ ही,

....

हालात -ए-नाज़िश,
उनके दिल-ए-हालात न समझ पाया,
जिन्दगी में सबसे ज्यादा जिसको चाहा,
उसके दिल-ए-हालात न समझ पाया,

....

कहने की बात,
जुबाँ से क्या कहें,
दिल में रखें,
आखें सब बयाँ करें,
....

हर वफ़ा से पहले,
नज़र कोई न चुराता है,
जब बेवफा हो जाता है,
न भी न आता है,

....

दीदार हो जायेंगे,
आँखों में चमक आ जायेगी,
आप को जो देख लेंगे,
रौनक-सी आ जायेगी,

....

हमसफ़र कुछ बिफर-सा गए,
कहते हुए कुछ ठहर-सा गए,
जाते-जाते रुक-सा गए,
मुड-मुड के देख-सा गए,

....

कुछ खुला ये दिल रखो,
जब तक कोई यहाँ रहने न आ जाए,
फिर भले ही ताला लगा रखो,
जब कोई यहाँ बस जाए,

....

वो निगाहें अपनी न छुपाओ,
हमको देखो, हमसे न शरमाओ,
हमसे क्यूँ ये शर्म-सी है,
निगाह से निगाह मिलाओ,

....

हमसाया हुश्न नवीसों का,
करके खली ये मकाँ चला,
अब कोई और यहाँ रह ले,
मैं तो अपने मकाँ चला,

....

इश्क-ओ-हालात ज़िबरत की खूबी,
हर माशूक को ले जाती है,
कोई कितना ही बचने जाए,
मोहब्बत सबको बहा ले जाती है,

....

बेबसी-ओ-अक्नियात की,
आखों से होती है,
जब आखों से आखों मिली हों,
किसे फ़िक्र हालात की होती है,

....

वाह साफ़ाकियत-ए-मजमूनात,
तेरे हुश्न के लिए क्या कहूँ,
गोशा-ए-लफ़्ज़ों को रहने दूँ,
दीदार-ए-अदा, आखें खुली रखूँ,

....

नख्तूल-ए-नहमक,
फितरन से बाज़ न आते,
रोज़-रोज़ देखने हुश्न मेरा,
मेरी गली चले आते,

....

ज़हन-ओ-सिफ्कत, रूठी है किस्मत,
किसे किस्सा अब बनने दें,
जिन्दगी अपनी ही न सम्भाली जाती,
किसे हिस्सा अब बनने दें,

....

हालात-ए-ज़हफर, अब न बता सकूँगा,
कितने हैं जख्म, अब न बता सकूँगा,
रहने दे मुझे मेरे, हालात-ए-अंजुमन में,
सहन सब कर लूँगा, तन्हाई-ए-सुखन में,

....

ये लडकियां भी,
क्या गुल खिलाती हैं,
जवानों को तरसाकर,
बूढों से दिल लगाती हैं,

....

अब तो इन तन्हाईओं,
में भी मज़ा आने लगा है,
अकेलेपन के इन लम्हों,
में भी मज़ा आने लगा है,

....

माकूल-ए-हालत,
बहुत बेदर्दी से गुज़र जाते हैं,
वो करीब आते-आते,
बहुत दूर से गुज़र जाते हैं,

....

न कुरेदो मेरे ज़ख्मों को,
नासूर वो पहले ही बन चुके,
दूर रखो अपने ज़ज्बातों को,
बहुत अपने गम सुना चुके,

....

वो अपनी गली से जाते हैं,
पीछे-पीछे से हम भी आते हैं,
चुपके से उनका घर देख आते हैं,
रोज़ अब उनके दीदार हो जाते हैं,

....

हर सिफत,
यूँ तनहा-सी होती है,
वो अभी भी,
यूँ तल्खा-सी होती है,

....

अब वो आते हुए भी शरमाते हैं,
पहले तो बड़ी बेताल्लुफी दिखलाते हैं,
न जाने क्या बात है, न बतलाते हैं,
क्या किसी और से इश्क फरमाते हैं,

....

इन्तहातन वो इश्क की,
इन्तहा न समझे,
रोज़ आ जाते हैं,
हुश्न लेकर इश्क न समझे,

....

वो तनहायीओं में उनको याद करना,
याद करते-करते उनमें ही खो जाना,
कितना इत्तफाकन होता है, ये, जाना,
ग़मों में डूबकर तुझे याद फिर करना,

....

तेरे नूर से,
मुझे भी नूर मिले,
तेरे चेहरे जैसा,
मेरा भी खिले,

....

हमसे तो आपने कहीं न,
जिन्दगी की बातें,
फिर भी हम समझ गए,
आपकी सब बातें,

....

मेरी साँसों की लडियां तुम बिन अधूरी हैं,
तुम चले आयो,
मेरी बाहों की कड़ियाँ तुम बिन अधूरी हैं,
तुम चले आओ,

....

अंदाज़-ए-हकरून-ए-अहमक से,
तेरा अंदाज़ बहुत पसंद आया,
तेरी बेहतरीन अदाएगी ने,
पेट पकड़-पकड़ कर बहुत है हंसाया,

....

गुल-ओ-गुलज़ार थी आखें,
गम-ओ-गम में डूबी हुईं,
आंसुओं की लड़ी थीं,
बेवफाई में पिरोई हुईं,

....

पहली मुलाक़ात,
बड़ी अजीब-सी थी,
पेश आयी उनसे,
बड़ी करीब-सी थी,

....

तेरी आवाज़,
तेरी आँखें,
तेरे ओंठ,
तेरे दाँत,

....

बहुत फनायत-सी कहानी है,
रूह-ए-फ़ना कर जाती है,
कुछ तो लोग कहेंगे,
कहानी जिन्दगी कह जाती है,

....

हाय दिल घबराता है,
चेहरा न दिखलाया जाता है,
पर क्या करें अब,
हुकुम जो उनका आता है,

....

उनकी बेचैनी,
उनकी बेहनतहाई बता रही है,
चुपके-चुपके दिल में,
प्यार जता रही है,

....

चेहरा वो छुपा रहे हैं,
दर्द-ए-हाल से,
पर्दा तो हटा दो,
चेहरा-ए-नूर से,

....

ये बेचैनी है किसलिए,
जरा नैन से नैन तो मिलाओ,
नज़र दूर है किसलिए,
ज़रा चेहरा तो उठाओ,

....

तेरी मासूमियत,
मैं पहले दिन ही भांप गया था,
जब तुझे तेखते ही,
मेरा दिल कांप गया था,

....

हमसे तन्हाई में,
मिला तो करो,
गुफ्तगू-ए-आलम,
कुछ करा करो,

....

सफा-ए-मोहब्बत-ए-आजम की सुनाई थी,
वफ़ा-ए-आरजू आरजू आज सुनाई थी,
दिल सारा भीग गया था अब,
जब कहानी मजनू-ए-लैला सुनाई थी,

....

इन अँधेरे पलों को,
उजाले से भर दूँ,
चन्द यादें तेरी जहन में,
ताज़ा कर लूँ,

....

ऐसी तन्हाई, वक्त कितना धीरे-धीरे,
खिसकता है,
गम की भरपाई, गम के बोझ से आगे न,
सरकता है,

....

यूँ ही गुफ्तगू होगी,
पता न चलेगा,
दिन कब कटेगा,
रात कब होगी,

....

जहमत-ए-उनाकत से,
उल्फत तो कर ली,
बेचैनी-सी बढती है,
क्यूँ ये फनाकत कर ली,

....

वो आ रहें हैं, दिल धडक रह है,
हाय सिहरन-सी, दौड़ रही है,
लेती रहूँ बस, उठ के कैसे बैठूं,
आँख से आँख, मिलाऊं कैसे,

....

इश्क-ए-हारूफ़ हुआ,
नूर-ए-हुश्न से,
ख्यालात-ओ-जहन हुआ,
इश्क-ए-दरिया से,

....

किस्मत-ए-जहान में,
किस-किस से मिला देता है,
जिनसे न मिलने की उम्मीद हो,
उनसे भी मिला देती है,

....

कायनात-ए-हुश्न की,
आज रुखी-रुखी सी लगती है,
जुल्फें बिखरी हैं, चेहरा ज़र्द है,
कुछ उखड़ी-उखड़ी से लगती है,

....

साफ़-ए-ज़ुल्म-ओ-हकीकत,
अब ज़ेबा-ज़ेबा से होती है,
जो मोहब्बत करता है,
उसे नसीहत नसीब होती है,

....

जहर-ओ-जमानते फ़कीनियत,
अज-ओ-अमुनते अजनियत,
दौर-ए-दयाये दयीनियत,
अबकाए महकाए महीनियत,

....

यूँ ही न बैठो सियाफने में,
उठो कुछ गौर करो,
कितना हुश्न, यूँ ही बेकरार है,
चलो और दिल्लगी करो,

....

यूँ ही जिखनख़त की आशिक,
पूछती है सरे बाज़ार,
क्या हुश्न चला गया मेरा,
क्या मैं हुयी बेज़ार,

....

हालात-ए-आनुम,
माज़रा क्या है,
कोई वजह तो बताओ,
काज़रा क्या है,

....

सही कहा है, कहने वाले ने,
बिन इश्क के कोई रह नहीं सकता,
इस जहान में हर शख्स,
इश्क किये बिन जी नहीं सकता,

....

ज़र-ओ-ताबीर-ओ-तुरबत,
आकियाना बना लो,
न छोड़ो अब जहाँ,
आशियाना बना लो,

....

कितना आकिद-दार हुश्न है,
नज़र न लगे इसे,
क्यूँ यूँ तन्हा घूमता है,
इश्क न लगे इसे,

....

गिरे गिर-ए-बान-ए-इकरत से,
न देख इस फितरत से,
तेरे जहन में क्या है,
बता दे अब फुरसत से,

....

रंगीन हसीन शामें,
खो-सी, गयी हैं,
लगता है वो यहाँ
आना भूल-सी गयी हैं,

....

वो पूछ बैठे हमसे,
फिर कब मिलोगी,
अब क्या कहूँ उनसे,
अब न मिलोनी होगी,

....

निकली आह दिल से,
आंशुओं में तर होकर,
चेहरा छुपा रहे अपना,
बाजुओं से ढककर,

....

साफे गम-ए-हालात दिल के,
तुझे क्या बताऊँ,
तू तो खुश रह ले,
कम से कम तुझे क्यूँ रुलाऊँ,

....

हम साया खातून-ए-मोहब्बत से,
इज़हार-ए-इश्क करता हूँ,
इकरार कर ले इसको,
तुझे बेपनाह मोहब्बत करता हूँ,

....

लखनवी अंदाज़-ओ-महलत से,
महक आती है,
अदावत का ज़माना है यहाँ,
अदावत यहाँ बिन सीखे ही आती है,

....

अदब-ओ-हक़ का,
मंज़र यहाँ ज़र्रे-ज़र्रे में है,
आती अदावत की खुशबू
यहाँ ज़र्रे-ज़र्रे में है,

....

सँभालते-सँभालते,
कितना और सँभालोगे,
छोड़ दो सब,
कितना गम और पालोगे,

....

आग-ए-दरिया न ढूढ़,
ये क्या, कम है,
जिन्दगी जीने में निकल जाए,
यही तो असली दम है,

....

ये गुलाब-ओ-अहमक,
अब महकती-सी अच्छी लगती है,
हिजाब-ओ-सहमक,
अब उतरती-सी अच्छी लगती है,

....

वक्त जाता था,
घडी दो घडी को याद आती थी,
क्यूँ छोड़ा उसने,
पता नहीं की क्या गुस्ताखी थी,

....

इश्क एक जानिब,
आशिक को नमूना बना देता है,
नाम उनका हो जाता है,
आशिक पुकारता जो रहता है,

....

जुबान-ए-ज़ुरबत पूंछते हैं,
तुमने मोह्बात क्यूँ की,
पता न था ये हालत हो जायेंगे,
फिर ये सोहबत क्यूँ की,

....

है फ़ना-ए-जो-मोहब्बत महरूम से,
टूटती आहों से सहारा दे-दे,
उससे मोहब्बत कर ले,
उसको किनारा दे-दे,

....

कितनों दिन के बाद,
कोई इजरत-ए-इश्क में,
मिटने आया है देख तो लेने दे,
किसको इश्क ने सताया है,

....

हालात-ए-गम क्या कहें, बस यूँ ही चुप रहें,
आखों से टक-टकी लगी रहे, न ही कुछ कहें,
गुमसुम से अनजान रास्तों पर टहला करें,
न अब किसी के दिल से दिल मिलाया करें,

....

जहान-ए-जबरूयिअत,
खुनस्ती से इश्क हुआ क्यूँ कर,
अक्र-या-देय, हुन्फ्फर-ए-म्यकान,
फिर छोड़ा क्यूँ कर,

....

हैं तिबख्दत-ए-मसकूयित में,
सहमे-सहमे से जनाब,
फिर इश्क क्यूँ किया, जब न गम न झेल
सके जनाब,

....

जईफ्ता-जईफ्ता अफ़साने मोहब्बत के,
बनते ही जाते हैं,
कितने दीवाने, इस सर-ए-आह में गुल
खिलते ही जाते हैं,

....

किसे हमदम बनाऊं, किसे साहिल बनाऊं,
किसे ज़ाफ़रान-ए-मोहब्बत अब तो बनाऊं,
कुछ महसूश नहीं होता, दिल ये खलूस में,
खाली-खाली तन्हा रहता, अपने मकूश में,

....

हकीकत-ए-ज़फ्लाहत से कुछ तन्हाई में
रहने दे,
यूँ पंखा भी न चला, पसीने में नहाई अब
रहने दे,

....

गजब-ए-हक्त, ये फ़क्त तुने लिख दिया,
लफ़्ज़ों से बयाँ, लिख-ए-हकीकत दिया,
आरजू-ए-दिल, सब सामने रख दिया,
खुदा से आरजू, आपने, अपनी कह दिया,

....

कशिश-ए-हकीकत,
कह दूं तो जीना मुश्किल हो जाए,
कशिश जो लगे किसी की,
उसका हो के रह जाए,

....

शुक्र है उस वक्त का,
जो बीतते-बीतते बीत गया,
अब भी तन्हाई में,
न जाने कितनी रौशनी दे गया,

....

गर तन्हाईयाँ साथ न देती,
हम इतना न लिख पाते,
सोचते-सोचते थक जाते,
पर इतना दर्द न भर पाते,

....

पी गया गम को,
जी गया उसी से,
पानी तक न छुआ,
आंसुओं को जो पिया,

....

कितना दर गुज़रा उसके दिल से,
तब तो वह शायर बना होता,
न गुज़रा होता ग़मों की गलियों से,
तो शायद कायर बना होता,

....

दिल ये टूट गया,
जब बात यह सुनी,
वो अब अपनी न रही,
किसी और की है बनी,

……….

कोई कह जाता है, आँखों से,
कोई सुन जाता है, कानों से,
यह तो मोहब्बत है,
हर कोई गुज़र जाता है, इन राहों से,

……….

मचलते अरमानों को,
दिल से लगा लिया,
किसी से कुछ न कहा,
उसे अपना बना लिया,

……….

आँखें कह रही हैं, इकरार को,
ओंठ कह रहे हैं, इनकार को,
क्या समझे तेरे प्यार को,
दिल में ही रहने दूं इशरार को,

……….

वो तारीफ़ भी करते हैं,
पता भी नहीं बताते हैं,
दिल में उतरते जाते हैं,
अहसाश भी न जताते हैं,

....

तेरे नैनों की बोली समझकर,
तेरा इंतज़ार न किया,
डोली अपनी सजाई,
प्यार न तुझसे किया,

....

वो शुबः कर बैठे,
क्या ये बात हम उनके लिए कह बैठे,
सोचने लग गए,
क्या कोई न कहने वाली बात कह बैठे,

....

कहे आंसुओं ने किस्से,
हम तो चुप ही रहते हैं,
उस बेवफा की याद में,
कमबख्त बहते ही रहते हैं,

....

तुम से हुबहु तो मिले,
पर कुछ कह न सके,
न जाने ओंठ क्यूँ चुप रहे,
कुछ कह न सके,

....

वो हमसे दूरियां बना लेते हैं,
न जाने क्यूँ मजबूरियां जता देते हैं,
पास जितना भी उनके जाओ,
दूरियां फिर उतनी वो बना लेते हैं,

....

वो ख़ामोशी अब आदत-सी,
हो गयी है,
शोर से दूरी-सी,
हो गयी है,

....

आगे से ख्याल है,
भी नहीं कोई मलाल का,
जिन्दगी को बेनियात,
किया किसी मकाल का।

....

रहने दे बारिशों में,
गम-ए-नियात से।
कोई तो है बेपशमिन्दा,
ख्याल-ए-हयात से।

....

तस्वीरें उतारकर,
जिन्दगी का फसाना,
कोई तो हमदम,
कोई तो बेगाना,

....

जिन्दगी ता किताब,
लगती है,
कभी तन्हा,
कभी बेहिसाब लगती है,

....

उलझती हैं निगाहें,
डोर से डोर को खींचो,
बात ही जब दिल की है,
आँसुओं से न उसे सींचो,

....

मामला बात का है,
थोड़ी-सी मुलाकात का है,
चन्द लफ्जों की बिनाह पर,
यूँ मुँह न मोड़ो,

……….

हम जुस्तजू लेकर बैठे,
कि मुआमला सुलझ जायेगा,
हमारे हमख्याल को,
हमारा ख्याल पसंद आयेगा,

………..

यूँ रूबरू ने हुए,
कि दिल की बातें कह सकें,
बस निगाहें ही मिलीं,
लफ्जों को जगह न दे सके,

……….

तलाशते हैं जहाँ में अभी तक,
वे मुरब्बत यूँ भटकते हुए,
कुछ न कुछ तो मिल जायेगा,
जिन्दगी में लटकते हुए,

……….

हम सदी पनो में,
आशियाने का जुगाड़ कर बैठे,
कभी इससे कभी उससे,
बेवजह इश्क कर बैठे,

....

नौशिन थी मोहब्बत,
सदाफत की जिन्दगी में,
हम तारों के शहर में,
बिजलियों के आसरे में,

....

रोज कुछ बातें करें,
रोज कुछ खामोश रहें,
थोड़ी-सी मुलाकातें करें,
अरमानों की राहें तकें,

....

सदाकत आईने में,
उदासी-सी छाई है,
अपनी आँखों से डर लगता है,
बोझिल-सी खाई है,

....

दूर-दूर तक ढूँढ़ती आँखे,
बैठे-बैठे भरती लम्बी आहें,
न हुस्न की परवाह है,
न चेहरे का गम है,

…………

काश अकेलेपन की घुटन,
भीड़ में ज्यादा नजर आताी है,
आदमी ही आदमी होते हैं,
पर तार न दिल से जुड़े होते हैं,

……….

कभी शराफत,
तो कभी आवारगी-सी लगती है,
यह जिन्दगी कभी,
सुलझती है, कभी उलझती है,

……….

तकरीबन हर शख्स बेजुबान है,
कभी किसी को, कभी किसी को,
अपने पर गुमान है,
तकरीबन हर शख्स बेजुबान है,

………..

आँखों में प्यार, लग रहा था,
चेहरा खिला-खिला,
लग रहा था, दिल में बड़ी,
उमंग लगी थी,

....

आँसुओं के आईने में,
जिन्दगी की तस्वीर नजर आती है,
गम में रोती नजर आती है,
खुशी में आँख छलक जाती है,

....

न साज था,
न आवाज थी,
फिर भी उसकी रंगत,
बड़ी असरदार थी,

....

बादलों के साये में,
धूप नजर आती है,
उड़ती-उड़ती पतंगे,
दूर तक निकल जाती हैं,

....

वादों की वाद खिलाफियाँ,
वक्त की आजमाईश में,
कौन वफा से रहे,
हर किसी की फरमाईश में,

....

समन्दर साहिल की बात करता है,
जमाना काहिलकी बात करता है,
जिन्दगी को अरमानों से भरता है,
हमसाया अंधेरे में दिखता है,

....

अंधेरे में अपने से,
पहचान होती है,
रूह के नूर से राह,
आसान होती है,

....

काश में प्रशंसा कर पाता,
किसी के दिल को खुश कर पाता,
निन्दा का रस मुझे न भाता,
जमाना मुझे भी प्यार कर पाता,

....

समा-ए-वक्त की आशनाई,
फैसला मुरव्वत में तन्हाई,
सफ गरोशा तोखी न की,
हर दोर-ए-फयाज में,

....

तस्वीरें ताउम्र,
आँखों की फुलकटों पर,
जिन्दगी का एतबार,
बे बसा-ए-सिलवटों पर,

....

फायदा जुस्तजू में,
तहरीर-सा हो भी गया,
जिन्दगी बाकी रही,
तन्हा वो सो ही गया,

....

रुफ्तबिन अहसास साहिल,
जिन्दगी बेनवाज हुई,
करें हैं आबलाब ये तखन,
किसी तरबज में हम,

....

रुकते रुकते कदमों ने,
एकदम तेजी पकड़ ली,
समझ न आया,
एकदम क्यों तेजी पकड़ ली,

....

डूबते-डूबते,
उबार देते हैं,
वक्त के ये दरिया,
सवार देते हैं,

....

उसका पानी,
मेरा रंग,
दोनों बनाएँ,
दुनिया संग,

....

वो बेफिक्र-सा अन्दाज,
वो बेफिक्र-सी जिन्दगी,
दूर तक गई,
या पास रह गई बन्दगी,

....

महकते आशियाने तो,
बस आखिरी मकाँ नहीं,
गुजरती है जिन्दगी जिसमें,
वो गली की दुकाँ नहीं,

....

सोचते यूँ सोचते,
कुछ आये यूँ क्यों सोचते,
आपके चेहरे से यों,
लगा है क्यों न बोलते,

....

पलक उठी धीरे-से,
फिर झपकी-सी लग गई,
वक्त की ये घड़ियाँ,
सामने से गुजर गईं,

....

बरबस उसका प्यार,
उसकी आँखों का इनकार,
उसके ओंठों का इकरार,
समझ से परे दिलदार,

....

बेसब्र यह हुश्न का अन्दाज है,
कोई तो मेरा एक राज है,
हर निगाह-ए-नाज से,
कुछ कहने का अन्दाज है,

....

कोई बेबसी में पूछे,
जिन्दगी के ये फसाने,
रुकते हुए कदम,
बढ़ते हुए दीवाने,

....

समझो तो कोई जाने,
किसी को न पहचाने,
जानिसार है यह जिन्दगी,
कोई खुशबू तो महकाने,

....

खुल गई हैं राहें,
उजाला सब तरफ है,
किस तरफ हम जाएँ,
मंजिल किस तरफ है,

....

किसकी ख्वाहिशें हैं,
किसकी जरूरते हैं,
मजबूरियाँ बहुत हैं,
मजदूरियाँ कम हैं,

....

इतनी तेज जिन्दगी में,
हर कोई मशगूल है,
बैठना किसको नसीब है,
हर कोई करीब है,

....

कुछ आईने,
कुछ अक्स दिखाते हैं,
महफिलों में कुछ नजर आते हैं,
तन्हाई में छिप जाते हैं,

....

बड़े दिनों के बाद,
आपका दीदार हुआ,
सब टी.पी. पर आपका,
शानदार परफोरमेन्स हुआ,

....

थोड़ी-थोड़ी कोशिशें,
छोटे-छोटे कदम,
मिल गई मंजिलें,
बैठ गए हम,

....

तूफान है जिन्दगी, कोई तो लिहॉफ है,
कौन जाने किस तरह, सब यह जनाब है,
महफिल है, यह आशियाना,
कौन किसके, खिलाफ है,

....

तो ख्वाबों का इतना,
बटवारा उसका,
यूँ चौंक कर उठना,
बैठना उसका,

....

घंटी न जाने कब से बज रही थी,
पर मेरा मन बात करने का नहीं था,
उसकी बात मुझे लग गई थी,
तमतमाई गुस्साई बैठ गई थी,

....

दागदार है जिन्दगी मेरी,
खुशनुमा माहौल कहाँ से लाऊँ,
कहो तो, कतरा-कतरा,
बिखरे लहू को समेट लाऊँ,

....

खोती-खोती-सी,
पटती-पटती-सी,
बात इरादों में,
कटती-कटती-सी,

....

तेरी निगाह से,
मैंने यह सीखा नहीं,
मेरी मोहब्बत में,
कोई सलीखा नहीं,

....

रुक कर जिन्दगी में,
वक्त को गुजरते देख लो एक बार
कहाँ जगह है तुम्हारी,
हो जाओ तुम समझदार,

....

वक्त के साथ,
जिस्म की जरूरते हैं,
जिस्म बदलता है,
जरूरतें बदलती हैं,

....

बेबस निगाहें पड़ी-पड़ी,
टुकुर-टुकुर, निहार रही हैं,
लाचार जिन्दगी को,
अलविदा कह रही हैं,

....

तन्हा-तन्हा इश्क की वादियाँ
गुलशन में भी बहार नहीं,
गुमसुम-सी बस आँख खुली है,
बिन रूह के देह पड़ी है,

....

वादियाँ ये क्या कहें,
बेखबर यूँ क्यों रहें,
हालात के पड़े नजर,
नजरें क्यों बंद रखें,

....

तस्वीर के किनारे,
कुछ जुड़ से गये हैं,
हर नाम से कुछ नाम,
जुड़ से गये हैं,

....

वो इश्क से महरूम रह गया,
किसी की बात में आ गया,
दो परिन्दों को इश्क करता देख,
इतना बड़ा पुलिन्दा लिखा गया,

....

उसे लगा,
वह ठगा गया,
अकेले में,
उसे प्यार याद गया,

....

कब तक,
आँखें बंद किये बैठें,
ले देके शरीर से भी,
हाथ धो बैठें,

....

तेरे दिल-हुकूक से,
आवाज-ए-मुन्तजर क्या हुई,
तौफीक-ए-नुसबत जिन्दगी का,
पैमाना मुनवरत हुआ बन्दिगी का,

....

रह-रह कर जिन्दगी में,
तन्हा में रह गया,
खुद की खुदगर्जी में,
तन्हा में रह गया,

....

रब जिया-ए-रे,
वक्त में,
इजहार-ए-मोहब्बत,
कर दिया,

....

धोखेबाज इस जहाँ में कामयाब होते हैं,
दोस्ती करते, शराब साथ पीते, साथ सोते,
बातें सब निकाल लेते हैं,
इस तरह धोखेबाजी कर लते हैं,

....

गम निसार दे,
फैजा-ए-उन्मन में तू,
क्यों अलबेला बनके,
यूँ बैठा है तू,

....

हर निगाह-ए-चमन से,
गुफ्तगू करता हूँ,
कहते हैं कुछ,
तो कुछ और करता हूँ,

....

तुझे वक्त का अन्दाज,
मेरी महफिल की तन्हाई से था,
तेरे अरमानों का फलसपा,
मेरी महफिल की तन्हाई से था,

....

कुछ मजबूरियाँ बस यूँ ही चली आती हैं,
बेखटक सामने खड़ी हो जाती हैं,
दूरियाँ रिश्तों से हो जाती हैं,
नजदीकियाँ अन्जानं में हो जाती हैं,

....

मेरी नसीबी,
तेरा ईरादा है,
कुछ तो कम,
कुछ तो ज्यादा है,

....

वो लम्हा तुझसे बिछड़ने का,
पता न था आखरी होगा,
मैं न समझता था कि,
जिन्दगी में इतना बड़ा धोखा होगा,

....

यादों के आईने में,
जो चित्र चल रहे हैं,
मत पूछो मेरे यार,
अरमां फिर से मचल रहे हैं,

....

तेरी तन्हाई कुछ तो हरजाई,
वक्त को थमने दे,
वो लम्हा धीरे-धीरे,
जहन में उतरने दे,

....

थोड़ी-सी फरमाईश,
हुश्न की नुमाईश,
बैठता हुआ दिल,
आज आकर मिल,

....

रुख्सत होकर,
जिन्दगी में आना मेरी,
रूबरू होकर,
मुझसे दूर जाना मेरी,

....

थोड़ा-थोड़ा वक्त,
लम्हा-लम्हा गुजरता गया,
अभी तो था अभी तो,
सरकता गया,

....

रह-रहकर इस जिन्दगी में,
कोई तो तन्हा लगता है,
कोई तो अपना लगता है,
कोई बेवफा लगता है,

....

थोड़ा तो इकरार कर लो,
जी भरकर प्यार कर लो,
हर तरफ दीवानगी है,
कुछ तो कुछ इजहार कर लो,

....

जिब्ला-जिब्ला ये वक्त,
कुछ तन्हाईयों में गुजर गया,
हर तरफ रोशनी थी,
फिर भी वक्त हरजाईयों में गुजरा,

....

दर नियासी मेरे हुश्न की,
बारिशों में चमकती है,
रोशनी ये आफताब की,
झर-झर के निखरती है,

....

नू पूछा हो तो बता दूँ,
पर इसमें भी पशोमन है,
हर आईना यह देखता है,
कि तस्वीर सीधी है,

....

नजर कातिल है,
गुनाह-ए-अजीम करती है,
अच्छे खासे मकाँ को भी,
ये स्याह करती है,

....

तन्हाईयाँ बेबसी में बदल गईं,
मुलाकातें बस जश्न में बस गईं,
दिन हो या रातें,
नज़र बस इक दर्श को तरस गईं,

....

रोज आईना देखने का मन नहीं करता,
रोज सजने का आलम नहीं बनता,
जबसे वो दूर चला गया है,
रोज बहाने से चली जाती हूँ उसके घर,

....

रास्ते जुदा हो या मंजिलें अलहदा,
पैर चलते हैं थक जाते हैं इन्सान,
बस यूँ ही कोई मिल जाता है हम राही,
न सफर का पता चलता है न थन का,

....

रुक गई आस थी या मन का गुबार था,
हो न सका जो उससे प्यार का इजहार था,
जुबाँ लड़खड़ाती थी दिल बेसुकून था,
लिख दिया खत जो उस बस जबाव का इन्तजार था,

....

नजरें अख्तियार में थी, कि मंजिलें भूल गये,
कुछ कदम उधर पड़े, कुछ कदम इधर पड़े,
कुछ देखा उनकी नजरों में कि चलना भूल गये,
उनकी वापसी के इन्तजार में वहीं ठहर गये,

....

तेरी खूबसूरती आज भी आँखों में बसी है,
बंद हो या खुली आँखों में तू ही सजी है,
भूल न पाता हूँ आज भी तेरा वो सफ़ाक हुश्न,
बस यादों में बसा है तेरा वो मदहोश हुश्न,

....

साजिसों का रंग
वक्त गुजरने के बाद नजर आता है,
हसीन हुश्न भी
बदरंग नजर आता है,

....
वक्त खेल खेलता ऐसे-ऐसे,

पीतल को सोना बताया जाता है,
काँच को हीरा बताया जाता है,
इन्सान को खुदा बताया जाता है,

....

राफ्तादारी हुश्न की,
बेनकाब-सी लगने लगी,
हर तरफ बेरुखी है,
मेहताब-सी महकने लगी,

....

थर-थर कर काँप रही थी,
उसके अरमान भाँप रही थी,
सामने कोबरा फन फैला रहा था,
मैं उसे साँप समझ रही थी,

....

दिशाएँ बदलती नहीं, हवाएँ मचलती नहीं,
सूरज आज भी जहाँ से निकलता है,
वही पूरब है, पछुआ आज भी चलती है
जहाँ से, वही पश्चिम है,

....
बड़ी बेईस्ताँ-सी जिन्दगी,

खुरमाईश-सी होने लगी,
थी बेवफा, मगर,
अपनी-सी होने लगी,

....

ख्याब था या जहनी फसन थी,
मुलाकात थी या वहमी कसन थी,
अब राफ्ता धीरे-धीरे होने लगा,
जीकर भी यह दिल जीने लगा,

....

जब हम जुल्फों की बातें करते हैं,
तो वह कहते हैं,
फजूल बातें मत करो,
उल्टा गर पढ़ो तो जुल्फ ही तो फजूल है,

....

जिक्र तक न किया,
फिक्र-ए-जिन्दगी में मैंने,
ताबूत पे ताबूत जमा होते गये,
हर जिस्र में तेरी,

....
रुमाईना जज्बा-ए-ताकत का,

फक्त समझदारी से होता है,
रूह-ब-रूह जब बैठे हैं,
जिक्र दिलों में होता है,

....

खुशुसियत,
वक्त-ए-वफा समझो,
कुछ रास्ते उधर हैं,
कुछ रास्ते इधर हैं,

....

मुक्तलिफ बेसबब-सा,
इन्तेख्बाव हूँ,
हर गिरह को,
खुलने का इन्तजार है,

....

कभी बेराफ्ता थी मेरी जिन्दगी,
कभी बेहिसाब का मेताल है,
राहिना तब्रे ख्याल है,
हर नजर की मलाल है,

......
हर सिरफन से,

आबदा मुरवत थी जैसे,
मुकाम-एक-फेहरत,
फसाना बन गई,

....

खिताब हो तख्त,
हासिल वो बन्दिगी,
नकाईस-ए-मुसबरत,
फैसला-ए-मुन्नवत,

....

जर्द चेहरा कि,
स्याह जिन्दगी हो गई,
राह मुकम्मल थी कि,
मंजिल खो गई,

....

महफिलों में तो बुलाते ही हो,
कभी तनहाई में भी बुला लिया करो।
साथ बैठाकर वक्त की इंतहा का,
एहसास करवा दिया करो।

....

मंजिलें खामोशियाँ अख्तियार कर लेती हैं।
रास्ते ही शोर मचाते हैं।
मंजिलों पर पहुँचनेवाले,
सुकून के साथ खमोशी को भी पा जाते हैं।

....

है तस्वीरों के सफे
कुछ इस तरह खुले हुए
आईना भी शरमाता है
नज़र न अब मिलाता है

....

हमने भी नफरतों से,
मुहब्बत जताई है।
पहले थी रुखाई,
अब करीब आई है।

....

लम्हा-लम्हा बीच-बीच में,
गलतफहमियां होती गईं।
नजदिकियां घटती गईं,
तन्हाइयाँ बढ़ती गईं

....

हैं राज जिन्दगी के,
जो तुमसे न कहे,
न जाने कब से,
मेरे सीने में हैं दबे,

....

वक्त की लकीरें,
कुछ धुंधला सी गई हैं।
आईने में देखते हैं,
तो चेहरे पर आ गई हैं।

....

गजब की आरजुएँ हैं,
खुलासे दर खुलासे क्यों करे,
तुए जहन में अपनी रखो,
हम जहन में अपनी रखें,

....

चाहकर उसने गम-ए-वक्त में,
मेरा साथ दिया।
आज दुनिया में उसी को,
जरूरत है मेरी।

....

निसबते सुकून से,
रह लेने दो अभी।
फुरसत के वक्त,
फिर मिलेंगे कभी।

....

जुस्तजू बनी रहे,
तेरे मेरे मयार में,
मैं आईना भी देखूँ,
तो तू नजर आए,

....

है खल्क की जुस्तजू बनी रहे,
तेरे मेरे मयार में,
मैं आईना भी देखूँ,
तो तू नजर आए,

....

न परेशान हो जिन्दगी से,
ये तो ऐसे ही बीतती है,
कभी तेज़ी-सी भागती है,
कभी रूकती-सी चलती है,

....

ऐसे ही गर चलते रहे,
तो जिन्दगी जहन्नुम बन जायेगी,
इस जहान से जाते ही,
कितनों को तसल्ली मिल जायेगी,

....

यूँ न पूँछो, दिल के जख्मों को,
ढका रहने दो उन्हें,
बू बहुत आयेगी,
मुस्कराहट से सजा रहने दो उन्हें,

....

मुद्दतों से वफा का,
ऐतराज हमने न किया।
अब तो साहिल पर,
जिन्दगी गुज़र गई हमारी।

....

जिन्दगी बेरास्ता हो गई
किसी के इंतजार में।
हमने भी उम्र सौंप दी,
किसी के इकरार में।

....

है नज़ीर तेरे हाशिये पे,
जिन्दगी फिर से एक दिन।
मनफरत-सी बात है,
कहो तो कान में कहूँ।

....

सिलसिला यह गुफ्तगू का,
हमनवा-सा हो गया।
वो आखों में मेरी देखते रहे,
हम आखों में उनकी देखते रहे।

....

हो सरज़द तेरा इश्क,
की तन्हाइयाँ मिट जाएँ।
गुफ्तगू मैं खुद से करुँ,
लफ्ज़ तुझे सुन जाएँ।

....

सिलसिला यह गुफ्तगू का,
हमनवा-सा हो गया।
वो आखों मेरी देखते रहे,
हम आखों में उनकी देखते रहे।

....

सिद्दतों से तन्हाइयाँ गुजर जाती हैं,
चलते-चलते मंजिलें मिल जाती हैं।
हो बैठे सुकून से कुछ इस तरह से,
बैठे-बैठे क्या परियाँ चली आती हैं।

....

किसी के भी दिल से पूछो,
जंग-ए-मसाईल सब तरफ हैं।
सब यही पूछते हैं कि,
तू उसकी तरफ है या मेरी तरफ है।

....

ख़बर है कि,
अब वो नज़र नहीं आते।
दूरियाँ रखते हैं,
अब नज़र नहीं मिलाते।

....

मर्दानगी उनकी,
क्या हम पे ही सरजद है।
कभी तो,
हुकुम-ए-उदूली करें जनाब।

....

हो तन्हा आलम बेबसी का,
कुछ देर तुम निहारो,
कुछ देर हम निहारें,
हो गुफ्तगू कुछ आँखों से,

....

हो गुफ्तगू गर,
मेरा भी जिक्र कर देना
उसके चेहरे से,
अहसास मेरे पढ़ लेना,

....

हो तन्हा आलम बेबसी का,
कुछ दे तुम निहारो,
कुछ देर हम निहारें,
हो गुफ्तगू कुछ आँखों से,

....

वो कशफ भी क्या,
जो आँसू न ला दे।
जमींदोज़ हो जाए देह,
रूह को जिला दे।

....

खुतूत वारिस-ए-हक में लिख डाले।
कुछ भेजे बाकी दराज में रख डाले।
जबाव में उधर से भी खुतूत आए।
कुछ पढ़े बाकी दराज में रख डाले।

....

चंद अफसाने,
बेबसी के आलम में हो गए।
न मिली जमीं,
तो आसमाँ पर ही सो गए।

....

चंद वादे उसने किए,
और ठुकरा दिए।
मिले तो, मुस्कुरा दिए,
और चल दिए।

....

चल रही हैं वादियाँ,
ठहरे हुए नयन हैं।
होश में तो आओ गाफिल,
किस-किस के ये चयन हैं।

....

सलाहें मानकर उनकी,
समझ हम अपनी खो बैठे,
मगज चलता नहीं उनका,
हमारी जुस्तजू के बिना,

....

रहे दूरियाँ इतनी कि,
ख़लिश बनी रहे,
कुछ देर तुम सुकूँ से जिओ,
कुछ देर मैं सुकूँ से जिऊँ,

....

मखमली बाज़ार थे,
राहें तंज-ओ-अंगार की।
क्या खरीदें क्या छोड़ें,
यही उधेड़बुन मंगनार की।

....

पलक उठी धीरे-से,
फिर झपकी-सी लग गई,
वक्त की ये घड़ियाँ,
सामने से गुजर गईं,

....

नकाब हो चेहरे पर,
तो आँखें बोलती हैं।
दिल मैं छुपा लो कितने राज,
सब खोलती हैं।

....

है फख्त जुनूँ की मोहब्बत का आशियाना बने,
जमीं पर बने कि आसमां पर बने।
जहाँ पर भी बने,
बस मोहब्बत का इक आशियाना बने।

....

कुछ ख्यालों को,
ख्याल ही रहने दो।
उन्हें अपनी कहने दो,
इन्हें अपनी सुनने दो।

....

वक्त के हालात कुछ और थे,
अब तारीख-ए-अंजुम में,
कुछ इस मुलाकात में,
कुछ उस मुलाकात में,

....

तेरी आजमाईशें,
वक्त की महफिलों में खो गईं।
चन्द सफों में रह गईं,
चन्द आसमानों में उड़ गईं।

....

ख्यालों की मीनार, बनती गई।
न ईंट लगी, न गारा।
तनहाइयों में बस,
इक यही तो है सहारा।

....

आईना जो देखा,
गर-ओ-गुरूर से।
बस इसी बात से,
शर्म से सर झुक गया मेरा।

....

गुमराह न कर उम्मीदों को,
आस इस दिल में रहने दे।
अभी तो झलक मिली है,
कुछ तो दिल की कहने दे।

....

है दबे पाँव चले आना,
मेरी महफिल उरूज़ पर है।
कुछ देर बैठकर जाना,
तेरी सहफिल दरूज़ पर है।

....

ता पसंद,
यह जिक्र-ए-इनायत रहेगा।
जमीं भी कहेगी,
आसमां भी कहेगा।

....

है मसगून,
कि तौबार-ए-अलम करता हूँ।
तुम बैठी रहो इसी तरह,
मैं अलम-ओ-आराम करता हूँ।

....

वो जबाब-ए-हक माँग सकते हैं कैसे,
जब रुसवाइयों के आँसू बह चुके हैं।
गुमसुम बैठे हैं भरे बाजार-ए-शोरगुल में,
अब सारे जहाँ में बेरोराईयाँ खो चुके हैं।

....

यह आशिकों की महफिल है जनाब,
यहाँ तनहाइयाँ मिला करती हैं।
रुसवाइयाँ मिला करती हैं,
आशिकों को कहाँ शहनाईयाँ मिला करती हैं।

....

अब अफसाने बयाँ नहीं होते,
तह-लो जुबान में मेरी।
अब कहानियों ने कह दिया है,
न करो तरफदारी मेरी।

....

जद्दोजहद की कशमश में,
जिन्दगी की रवानियाँ गईं।
यही इसकी, यही उसकी,
हम सबकी कहानियाँ भईं।

....

हैं जुनूँ, कि फ़ख्त,
ख्वाईशें पूरी हों।
चाहे जिसकी भी हों,
पर ख्वाईशें पूरी हों।

....

किधर से शुरू करून, किधर से ख़तम करून,
जिन्दगी का फ़साना, कैसे तेरी नज़र करून,
है ख्याल जिन्दगी का, कैसे मुनव्वर करून,
मगरिब के जानिब खड़ा, कैसे तसव्वुर करून,
--- पप्पू परिहार “बुण्देलखण्डी”